ज्ञानामृत

वर्ष 49, अंक 8, फरवरी 2014 (मासिक),
मूल्य 7.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 90 रुपये

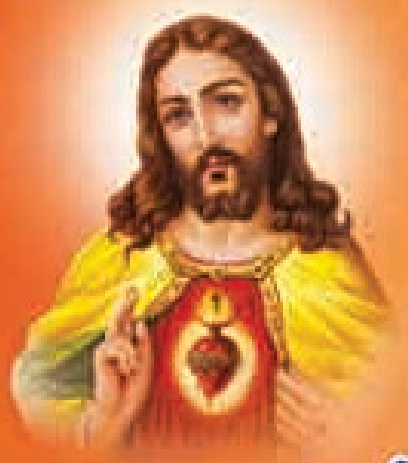

क्राईस्ट

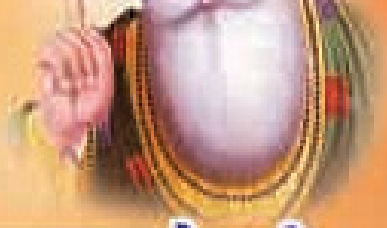

गुरुनानक देव जी

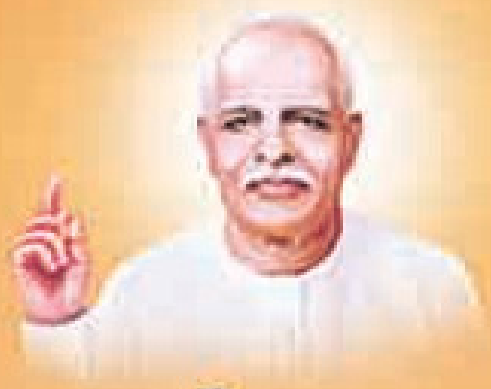

प्रजापिता ब्रह्मा

रामेश्वरम

गोपेश्वरम

शंकर

सोमनाथ

संग-ए-असवद (मक्का)

निराकार परमपिता परमात्मा शिव सर्व आत्माओं के कल्याणकारी हैं, रूप में बिन्दु और सर्व गुणों के सिंधु हैं। वे प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर पिछले 78 वर्षों से विश्व नवनिर्माण का कर्त्तव्य कर रहे हैं। शिव अवतरण की 78वीं जयंती की आप सबको कोटि-कोटि बधाइयाँ।

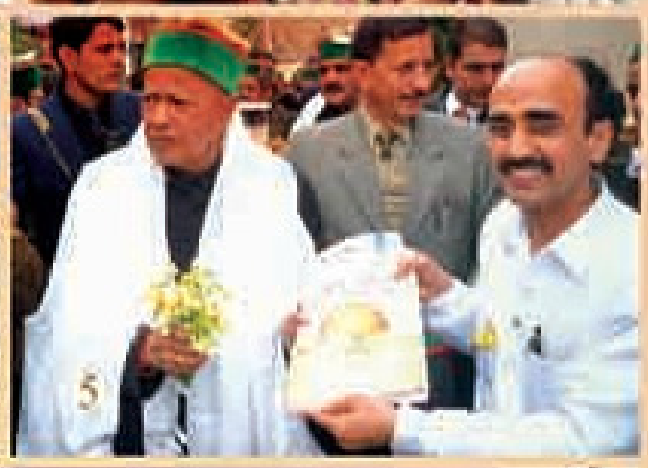

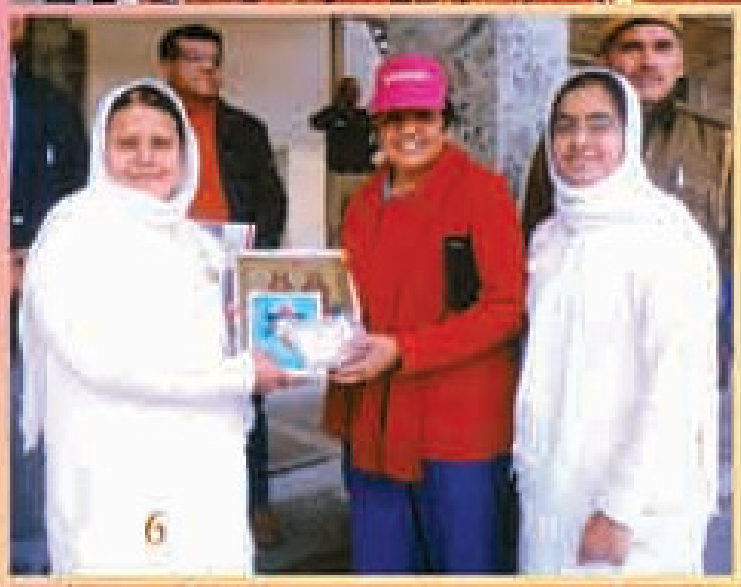

1.**आनन्दपुर साहिब**- श्री श्री रविशकर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रीमा बहन। 2.**कुचामन सिटी**- योगगुरु बाबा रामदेव जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रचना बहन। 3.**जयपुर (मान सरोवर)**- जैन मुनी तरूण सागर जी महाराज को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.लीला बहन। 4.**जबलपुर (कटंगा कालोनी)**- 'सर्वधर्म सम्मेलन' में मंचासीन हैं महामण्डलेश्वर स्वामी अखिलेश्वरानंद गिरी जी, हाजी लाल कादरी, ब्र.कु.विमला बहन एवं अन्य। 5.**रामपुर बुशैहर**- हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्री भाता वीरभद्र सिंह को यातायात विभाग की सेवाओं की जानकारी देते हुए ब्र.कु.सुरेश भाई। 6.**बवाना (दिल्ली)**- समाज सेविका बहन किरण बेदी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.चन्द्रिका बहन। 7.**दाहोद**- अखिल गुजरात आदिवासी जागृति अभियान का उद्घाटन करते हुए गुजरात के ग्राम विकास मन्त्री भाता भूपेन्द्र सिंह चूडासमा, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, सांसद डा.प्रभा बहन, ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.राजू भाई एवं अन्य। 8.चेन्नई- 'श्रीमद्भगवद्गीता तथा अहिंसा परमोधर्म' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए तामिलनाडु के राज्यपाल भाता के रोसैय्या, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.आशा बहन, डा.डी.आर.कार्तिकेयन तथा ब्र.कु.बीना बहन। 9.**कोल्हापुर (लाटवडे)**- शिवाजी विद्यापीठ के कुलगुरु डा.एन.जे.पवार को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.पदमा बहन तथा अन्य उनके साथ।

संजय की कलम से ..

त्रिमूर्ति शिव जयन्ती का आध्यात्मिक रहस्य

ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के भी रचयिता, निराकार स्वयंभू, सर्वशक्तिमान्, ज्ञानसागर, पतित-पावन, परमप्रिय, परमपूज्य परमपिता परमात्मा शिव का दिव्य जन्म मानव मात्र के कल्याणार्थ होता है। अत: 'शिव' शब्द ही कल्याण का वाचक हो गया है। सर्व आत्माओं का सदा कल्याण करने के कारण वे 'सदाशिव' कहे जाते हैं। उनका दिव्य-जन्मोत्सव ही हीरे-तुल्य है। अत: यह आवश्यक है कि इस महापर्व महाशिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्यों पर प्रकाश डाला जाये।

शिवरात्रि 'रात्रि' में क्यों?

अन्य सभी जयन्तियाँ दिन में मनाते हैं लेकिन निराकार परमात्मा शिव की जयन्ती रात्रि में मनाते हैं। वह भी फाल्गुन में कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि में, जबकि घटाटोप अन्धकार छाया होता है। वस्तुत: ज्ञानसूर्य, पतित-पावन परमात्मा शिव का अवतरण धर्मग्लानि के समय होता है जब चतुर्दिक् घोर अज्ञान-अन्धकार छाया रहता है तथा विकारों के वशीभूत होकर मनुष्य दु:खी एवं अशान्त हो उठते हैं तब ज्ञानसागर परमात्मा शिव आकर ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं जिससे रचयिता तथा रचना के आदि-मध्य-अन्त का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर मनुष्य इस जीवन में अतीन्द्रिय आनन्द की तथा भविष्य में नर से श्री नारायण और नारी से श्री लक्ष्मी पद की प्राप्ति करते हैं।

शिव पर अक और धतूरा

अन्य देवताओं पर तो कमल, गुलाब या अन्य सुगन्धित पुष्प चढ़ाते हैं लेकिन पतित-पावन परमात्मा शिव पर अक, धतूरे का रंग व गन्धहीन पुष्प चढ़ाते हैं। क्या आपने कभी विचार किया है कि ऐसा क्यों? वास्तव में जब पतित-पावन परमात्मा शिव पतित, तमोप्रधान, कलियुगी, आसुरी सृष्टि पर पावन, सतोप्रधान, सतयुगी दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना के लिए अवतरित होते हैं तो सभी जीवात्माओं से काम-क्रोधादि पंच विकारों का दान मांगते हैं। जो नर-नारी, जीवन में दु:ख-अशान्ति पैदा करने वाले पंच विकारों को परमात्मा शिव पर चढ़ा देते हैं, वे निर्विकारी बन पावन, सतयुगी दैवी स्वराज्य के अधिकारी बनते हैं। इसी की स्मृति में भक्ति मार्ग में परमात्मा शिव पर अक-धतूरे का फूल चढ़ाते हैं।

पौराणिक कथा भी है कि भगवान शिव ने मानवता के रक्षार्थ विष-पान किया था। 'काम विकार' ही तो वह विष है जिसने मानवमात्र को काला, तमोप्रधान बना दिया है। सारे कुकर्मों

अमृत-सूची

- राजयोग से स्वभाव परिवर्तन *(सम्पादकीय)* 6
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी 8
- ईश्वरीय कारोबार में 10
- 'पत्र' संपादक के नाम 13
- भाई-बहनों के प्रश्न.....14
- शिवपिता ने जीवन 15
- प्रेम के सागर का प्रेम 16
- जब मरते-मरते बाबा ने.....17
- पल भर के प्यार ने.....18
- बेहद की वैराग वृत्ति.....19
- पहला सुख निरोगी काया.....20
- बाबा ने आबाद कर दिया 22
- तारा है तू गगन का *(कविता)* 23
- शक्ति निकेतन के फरिश्ते ...24
- शिवबाबा से बात.....26
- सचित्र सेवा समाचार 27
- मिल गई मंज़िल मुझे 28
- सचित्र सेवा समाचार 30
- जेल में मिली नई राह.....32
- मेरे सुहाने बाबा *(कविता)* 33
- राजयोग से मन की शान्ति....33
- जब सोये खुले आसमान.....34

सदस्यता शुल्क

	वार्षिक	आजीवन
भारत		
ज्ञानामृत	90 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	90/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

की यही जड़ है। अति कामुकता ने आज जनसंख्या-विस्फोट की समस्या उत्पन्न कर दी है। वस्तुत: काम की विषैली ज्वाला में जलकर ही यह सृष्टि स्वर्ग से नर्क में, अमरलोक से मृत्युलोक में बदल जाती है। श्रीमद्भगवद्गीता की शब्दावली में 'काम-क्रोध नर्क के द्वार' हैं। कहते भी हैं कि ब्रह्मचर्य के बल से देवताओं ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी। कामारि तो परमात्मा शिव ही हैं जिन्होंने तीसरा नेत्र खोलकर काम को भस्म किया था। कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग पर जब ज्ञानसागर, पतित पावन, निराकार परमात्मा शिव अवतरित होते हैं तो प्राय:लोप गीता-ज्ञान की शिक्षा देकर मनुष्यात्माओं का तृतीय नेत्र खोलते हैं जिसकी प्रखर ज्वाला में कामादि विकार जलकर भस्म हो जाते हैं। फिर आधा कल्प अर्थात् सतयुग-त्रेता में इन विकारों का नाम-निशान भी नहीं रहता। शास्त्र भी कहते हैं कि द्वापर में कामदेव का पुनर्जन्म हुआ था।

शिव की सवारी

परमपिता परमात्मा शिव के साथ एक नन्दीगण भी दिखाते हैं। कहते हैं कि उनकी सवारी बैल है। इसका भी लाक्षणिक अर्थ है। परमात्मा अजन्मे हैं। उनका जन्म माँ के गर्भ से नहीं होता। विश्व-पिता का कोई पिता नहीं हो सकता। उनका जन्म दिव्य और अलौकिक होता है। वे स्वयंभू हैं। कलियुग के अन्त में धर्मस्थापनार्थ स्वयंभू निराकार परमात्मा शिव का अवतरण होता है अर्थात् वे एक साकार, साधारण मनुष्य तन में प्रवेश करते हैं। परमात्मा के दिव्य प्रवेश के पश्चात् उनका नाम पड़ता है 'प्रजापिता ब्रह्मा'। निराकार परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम द्वारा प्राय:लोप गीता-ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर मनुष्यात्माओं को तमोप्रधान से सतोप्रधान बना, सतोप्रधान सतयुगी सृष्टि की पुनर्स्थापना करते हैं। इसलिए परमात्मा के साथ ब्रह्मा को भी स्थापना के निमित्त माना जाता है तथा शिव के साथ ब्रह्मा के प्रतीक नन्दीगण की प्रतिमा भी स्थापित की जाती है।

शिवलिंग पर अंकित तीन रेखाओं तथा तीन पत्तों वाले बेलपत्र का रहस्य

शिवलिंग पर सदा तीन रेखायें अंकित करते हैं और तीन पत्तों वाला बेलपत्र भी चढ़ाते हैं। वस्तुत: परमात्मा शिव त्रिमूर्ति हैं अर्थात् ब्रह्मा-विष्णु-शंकर के भी रचयिता हैं। वे करन-करावनहार हैं। ब्रह्मा द्वारा सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना कराते हैं, शंकर द्वारा कलियुगी आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं तथा विष्णु द्वारा सतयुगी दैवी सृष्टि की पालना कराते हैं। जब परमात्मा का अवतरण होता है तब ही इन तीन देवताओं का कार्य भी सूक्ष्मलोक में आरम्भ हो जाता है। अत: शिव जयन्ती ही ब्रह्मा-विष्णु-शंकर जयन्ती है तथा गीता-जयन्ती भी है क्योंकि अवतरण के साथ ही परमात्मा शिव गीता-ज्ञान सुनाने लगते हैं।

शिव-विवाह के बारे में वास्तविकता

बहुत-से लोग शिवरात्रि को शिव-विवाह की रात्रि मानते हैं। इसका भी आध्यात्मिक रहस्य है। निराकार परमात्मा शिव का विवाह कैसे? यहाँ यह स्पष्ट समझ लेना आवश्यक है कि शिव और शंकर दो हैं। ज्योति-बिन्दु ज्ञान-सिन्धु निराकार परमपिता

परमात्मा शिव ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के भी रचयिता हैं। शंकर सूक्ष्मलोक के निवासी एक आकारी देवता हैं जो कि कलियुगी सृष्टि के महाविनाश के निमित्त बनते हैं। शंकर को सदा तपस्वी रूप में दिखाते हैं। अवश्य इनके ऊपर कोई हैं जिनकी ये तपस्या करते हैं। निराकार परमात्मा शिव की शक्ति से ही ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर स्थापना, पालना और विनाश का कर्त्तव्य करते हैं। सर्वशक्तिमान् परमात्मा शिव के विवाह का तो प्रश्न ही नहीं उठता। वे एक हैं और निराकार हैं। हाँ, आध्यात्मिक भाषा में जब भी आत्मा रूपी सजनियाँ जन्म-मरण के चक्र में आते-आते शिव साजन से विमुख होकर घोर दुखी और अशान्त हो जाती हैं तब स्वयंभू, अजन्मे परमात्मा शिव, प्रजापिता ब्रह्मा के साकार साधारण वृद्ध तन में दिव्य प्रवेश करते हैं और आत्मा रूपी पार्वतियों को अमरकथा सुनाकर सतयुगी अमरलोक के वासी बनाते हैं जहाँ मृत्यु का भय नहीं होता, कलह-क्लेश का नाम-निशान नहीं रहता तथा सम्पूर्ण पवित्रता-सुख-शान्ति का अटल, अखण्ड साम्राज्य होता है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर भूली-भटकी आत्माओं का परम प्रियतम परमात्मा शिव से मंगल-मिलन ही शिव-विवाह है। अत: भगवान शिव का दिव्य-जन्मोत्सव ही उनका आध्यात्मिक विवाहोत्सव भी है।

वर्तमान काल में परमपिता शिव का अवतरण

अब पुन: धर्म की अति ग्लानि हो चुकी है तथा तमोप्रधानता चरम सीमा पर पहुँच चुकी है। सर्वत्र घोर अज्ञान-अन्धकार फैला हुआ है। घोर कलिकाल की ऐसी काली रात्रि में सतयुगी दिन का प्रकाश फैलाने के लिए ज्ञानसूर्य, पतित-पावन परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के साकार, साधारण, वृद्ध तन में पुन: अवतरित हो चुके हैं और इस वर्ष हम उनके दिव्य अवतरण की प्रतीक, 78वीं शिव जयन्ती मना रहे हैं। आप सभी जन्म-जन्मान्तर से पुकारते आये हैं कि हे पतित-पावन परमात्मा, आकर हमें पावन बनाओ। आपकी पुकार पर विश्वपिता परमात्मा इस पृथ्वी पर मेहमान बनकर आये हैं और कहते हैं, 'मीठे बच्चो! मुझे काम, क्रोधादि पांच विकारों का दान दे दो तो तुम पावन, सतोप्रधान बन नर से श्री नारायण तथा नारी से श्री लक्ष्मी पद की प्राप्ति कर लोगे। शिवरात्रि पर भक्तजन व्रत करते हैं तथा रात्रि का जागरण भी करते हैं। वस्तुत: पाँच विकारों के वशीभूत न होने का व्रत ही सच्चा व्रत है और माया की मादक किन्तु दुखद नींद से जागरण ही सच्चा जागरण है। ज्ञानसागर परमात्मा हमें प्राय:लोप गीता-ज्ञान सुनाकर 'पर' धर्म अर्थात् शरीर के धर्म से ऊपर उठा, स्वधर्म अर्थात् आत्मा के धर्म में टिका रहे हैं। अत: आइये अब हम ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा पाँच विकारों पर पूर्ण विजय प्राप्त कर 'स्वधर्म' में टिकने अर्थात् आत्माभिमानी बनने का सच्चा व्रत लें और आनन्द सागर निराकार परमात्मा शिव की आनन्ददायिनी स्मृति में रह उस अनुपम, अलौकिक, अतीन्द्रिय आनन्द की प्राप्ति करें जिसके लिए गोप-गोपियों का इतना गायन है।

निराकार आत्मा का निराकार परमात्मा से आनन्ददायक मंगल-मिलन ही सच्चा शिव-विवाह है। इस मंगल-मिलन से हम जीवनमुक्त बन जाते हैं और गृहस्थ जीवन आश्रम बन जाता है जहाँ हम कमल पुष्प सदृश्य अनासक्त हो अपना कर्त्तव्य करते हुए निवास करते हैं। इस कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग पर जिसने यह मंगल-मिलन नहीं मनाया वह पश्चाताप करेगा कि हे पतित-पावन परमात्मा, आप आये और हमें पावन बनने का आदेश दिया लेकिन हम अभागे आपके आदेश पर चल अपने जीवन को कृतार्थ न कर सके। अत: मानवमात्र का यह परम कर्त्तव्य है कि वे 78वीं शिव जयन्ती के इस पावनतम् अवसर पर सुखदाता, दुखहर्ता परमात्मा शिव पर, जीवन में दुख-अशान्ति पैदा करने वाले पंच विकार रूपी अक-धतूरे अर्पण कर दें और निर्विकारी बन पावन सतयुगी दैवी सृष्टि की पुनर्स्थापना के ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनें। ❖

राजयोग से स्वभाव परिवर्तन

वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में अधिकतर व्यक्ति यह सोचते हैं कि हमने अगले 40-50 वर्षों तक के खर्च के लिए धन का काफी प्रबन्ध कर लिया है इसलिए हम निश्चिंत हैं। शादी, बीमारी, मकान...आदि सब प्रकार के खर्चों को ध्यान में रखकर वे अधिक से अधिक धन का प्रबन्ध करते हैं। परन्तु क्या अकेले धन की बहुलता से जीवन में निश्चिन्तता आ सकती है? यदि बच्चे गलत चलन चल गए और व्यसनों में उलझ गए तो, किसी ने धोखा, हेराफेरी करके जमीन-जायदाद पर कब्जा कर लिया तो, मित्रों ने किसी कमज़ोरी का गलत फायदा उठाया तो, बेटे-बहू की तनातनी हुई तो.... ये कितनी ही प्रकार की समस्याएँ हैं जो धन से नहीं सुलझतीं बल्कि सूझ, समझ और आत्मबल मांगती हैं। धन तो उधार भी मिल सकता है पर सूझ, समझ और आत्मबल तो उधार भी नहीं मिलते। यदि अपनी समस्याओं के हल के लिए किसी अन्य से राय मांगते हैं तो घर की बात के बाहर चले जाने और निन्दा होने का भय भी सताता है। यदि मन में दबाए रखते हैं तो मायूसी, मजबूरी, आवेश, आक्रोश के मिले-जुले भँवर में फँसे रहते हैं। फिर ना काम करने का उमंग रहता है, न जीने की आशा, हारे हुए योद्धा की तरह मुँह छिपाए रखने की मानसिकता बन जाती है।

आध्यात्मिक ज्ञान है अदृश्य कमाई

धन एकत्रित करना जीवन की एक नितान्त महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है परन्तु परिस्थिति आने पर कमाया हुआ धन भी हमारा साथ नहीं देता है। उसे बहुत सम्भाला, सहेजा था पर इस आड़े वक्त में वह काम नहीं आ रहा है इसलिए धन के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान का बल अपने में भरना भी बहुत ही जरूरी है। जैसे धन एक दिन में नहीं कमाया जा सकता, उसी प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान को भी प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा सीखना अर्थात् विचारों में समाना होता है। जैसे ज़रूरत के समय हम नोटों की गड्डी में से कोई भी नोट निकालकर काम चला लेते हैं ऐसे ही ज़रूरत के समय, अपने भीतर जमा ज्ञान की किसी भी अनुकूल बात का प्रयोग कर हम अपना मार्ग निकाल सकते हैं इसलिए धन जमा करने की तरह ही प्रतिदिन आध्यात्मिक ज्ञान रूपी सच्ची, तुरंत फल देने वाली पर अदृश्य कमाई जमा करना भी ज़रूरी है।

जड़ तत्वों से भिन्न है आत्मा

आध्यात्मिक ज्ञान का अर्थ है आत्मा का अध्ययन। जैसे शरीर का अध्ययन करते हैं, इसी प्रकार आध्यात्मिकता हमें आत्मा, परमात्मा, कर्मगति आदि का ज्ञान कराती है। अगर कोई हमसे हमारा परिचय पूछे तो हम शरीर का नाम, धाम, काम, शरीर की जन्मतिथि, शरीर का वजन, शरीर की लम्बाई आदि बता देते हैं पर क्या हम सचमुच शरीर हैं? शरीर तो पाँच भिन्न-भिन्न तत्वों से मिलकर बना है तो हम इन पांचों में से कौन-सा तत्व हैं। हम अग्नि हैं, जल हैं, वायु हैं, पृथ्वी हैं या आकाश हैं। स्पष्ट है कि हम इनमें से कोई भी तत्व नहीं हैं, ना ही पांचों का मिला-जुला रूप हैं। शरीर तत्वों से अवश्य बना है पर हम तत्वों से भिन्न हैं। हम चेतन हैं अर्थात् आत्मा हैं। तत्वों से बने शरीर को चलाने वाले हैं। जड़ शरीर की हर गतिविधि का आधार हम चेतन आत्मा ही हैं।

जरूरी है आत्मा की सीट की सुरक्षा

आत्मा मन-बुद्धि-संस्कार से युक्त है। जड़ शरीर से कार्य करवाने वाली है। आत्मा भ्रकुटि के मध्य में विराजमान है तथा शरीर और इंद्रियों

की राजा है। यही कारण है कि राजा के स्थित होने का मस्तिष्कीय विभाग शरीर में सर्वोपरि महत्व का है। यूँ तो किले की हर ईंट महत्वपूर्ण होती है परंतु किले के जिस भाग में राजा और उसका दरबार होता है, उस क्षेत्र के लिए खास कानून-कायदे और सुरक्षा व्यवस्था होती है। स्कूटर-गाड़ी चलाने वालों के लिए हेलमेट या बेल्ट पहनने का नियम भी आत्मा की सीट की सुरक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

मोबाइल की तरह आत्मा को भी चार्ज करना ज़रूरी

हम प्रतिदिन मोबाइल का प्रयोग करते हैं। प्रयोग करने से इसकी बैटरी डिस्चार्ज होती है, उसे पुन: चार्जर द्वारा चार्ज करना पड़ता है। मान लीजिए, हम मोबाइल का स्वर्ण निर्मित कवर बनवा लें जिसकी कीमत लाखों में हो। ऐसे कवर वाला मोबाइल सुन्दर तो बहुत लगेगा, पर इससे उसकी चार्जिंग भी हो जाए, यह नहीं होगा। चार्जिंग के लिए उसका कनेक्शन लाइट से जोड़ना ही पड़ेगा। मोबाइल की तरह ही हम अपने शरीर को खूब महंगा लिबास और गहने पहना लें तो क्या इससे आत्मा शक्तिशाली बन जाएगी? नहीं ना। गहने-कपड़े शरीर को आकर्षक बना देंगे पर आत्मा को शक्तिशाली, सुन्दर, तेजस्वी बनाने के लिए उसका कनेक्शन भी सर्वोच्च प्रकाश परमात्मा पिता से जोड़ना अनिवार्य है। जैसे आत्मा प्रकाश का एक सूक्ष्म बिन्दु है, उसी प्रकार परमात्मा पिता भी प्रकाश के एक सूक्ष्म दिव्य बिन्दु ही हैं। बिन्दु होते हुए भी वे सर्वगुणों और सर्व शक्तियों के सिन्धु हैं। उनके एक-एक गुण की गहराई में जाने से अनेक नवीन अनुभव-रत्न प्राप्त होते हैं।

राजयोग से विकर्म रूपी मैल का नाश

परमात्मा से जुड़कर आत्मा में दिव्य करंट भरता है जिससे उसकी स्वभावगत कमी, कमज़ोरियाँ मिट जाती हैं और परमात्मा पिता के समान ही प्रेम, शान्ति, निरहंकारिता आदि गुण उस में आ जाते हैं। सौर ऊर्जा हो या अन्य कोई ऊर्जा, वह ठण्डे को गर्म कर देती है, गर्म को ठण्डा कर देती है, ऊपर की चीज़ को नीचे उतार देती है, नीचे की चीज़ को ऊपर चढ़ा देती है, तेज चलते को रोक देती है, रुकी हुई को चला देती है, इस प्रकार परिवर्तन करती है। परमात्मा की शक्ति फिर मनुष्यों के स्वभाव में परिवर्तन लाती है। कोई ठण्डा, आलसी, अकर्मण्य हो उसे उमंगवान, कर्मठ बना देती है, कोई हाइपर एक्टिव हो उसकी कर्मेन्द्रियों को स्थिर कर देती है। कोई निराशा के अन्धकार में भटक रहा हो, जीने का उत्साह खो चुका हो उसे आशा की किरण और जीने का उत्साह प्रदान करती है। विकारों से हारे हुए को विकार-जीत बना देती है। मैले कपड़े को साबुन और पानी के घोल में डाल दिया जाए तो मैल खत्म हो जाता है। इसी प्रकार, आत्मा को भी पिछले 63 जन्मों से विकृत स्वभाव रूपी मैल लगा है। मन-बुद्धि से ज्ञान-सूर्य भगवान के समक्ष जाते ही वह विकर्म रूपी मैल उतर जाता है और आत्मा उज्ज्वल हो जाती है।

चीजों का नहीं, मनुष्यों का सुधार

मनुष्य प्राकृतिक तत्वों से छेड़-छाड़ करके, भोजन, कपड़े, मकान, संचार, यातायात तथा रहन-सहन के साधनों में परिवर्तन करके अपनी रीति से सुधार की ओर बढ़ रहे हैं। वे मानव के अलावा अन्य चीज़ो में सुधार करते हैं। इससे चीज़ें तो अच्छी बन जाती हैं परन्तु मानव तो बिगड़ता ही चला जाता है। वह बिगड़ा हुआ मानव भला दुनिया को सुधरने कैसे देगा। भगवान पहले मनुष्यों को सुधारते हैं। सुधरा हुआ मनुष्य ही सुधरी हुई दुनिया का निर्माण कर सकता है। सुधरी हुई दुनिया अर्थात् कमल समान अलिप्त इंद्रियों वाले देवी-देवताओं की दुनिया।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... – सम्पादक

प्रश्नः- महिमा योग्य बनने के लिए कौन-सा महीन पुरुषार्थ चाहिए?

उत्तरः- यह क्या करता, यह क्या करता... इस चिंतन से मन-बुद्धि मुक्त रहें क्योंकि उसमें हमारा क्या जाता है? वह क्या करता है, यह देखना बड़ी भूल है। फलाने ने यह किया, वो किया... यह बताना तुम्हारी ड्यूटी नहीं है। जो हो रहा है, अच्छा है, जो होगा, अच्छा होगा, यह अन्दर में गारंटी है। मैं तो प्रभु-लीला देख रही हूँ। कैसे बाबा ने इतनी सुन्दर रचना रची है! हरेक को खटिया, कुटिया मिलती है, खाना मिलता है, बनाने वाले बनाते हैं, खिलाने वाले खिलाते हैं। बाबा ऊपर में बैठ यहाँ वहाँ सब देख रहे हैं। बाबा की दृष्टि में इतनी ताकत है, जो हमारी वृत्ति-स्मृति भी श्रेष्ठ बनती जा रही है क्योंकि बाप, टीचर, सतगुरु है। जब से शिवबाबा ने ब्रह्माबाबा का रथ लिया, तब से ब्रह्माबाबा को तो यही लगन रही कि जैसे शिवबाबा ने मुझे उच्चतम बनाया है, ब्रह्मावत्स भी बनें। महिमा योग्य बनने के लिये महीन जिगरी पुरुषार्थ चाहिए। समय निकाल के एकांत में बैठ एकाग्रता से योग करो, सारा समय व्यस्त नहीं रहो। किसी भी कार्य के लिए कोई निमित्त बनता है तो उसे उसका बहुत अच्छा फल मिलता है, पहले भी, बाद में भी। इसके लिए अन्तर्मुखी हो एकाग्रता की शक्ति से खुद को और बाप को पहचानो, उसके बिगर यह नहीं होगा।

प्रश्नः- सर्वशक्तिवान की शक्ति किस रूप में हाजिर रहती है?

उत्तरः- ज्ञान, योग, धारणा और सेवा, इन चारों में से किसी में भी कमी न हो। मैं एक-एक मिनट या कुछ सेकेण्ड भी बीच-बीच में शान्त रहती हूँ। हमारी ऐसी पीसफुल लाइफ सदा कैसे रही है? जब सर्वशक्तिवान का बच्चा हूँ तो कार्य-व्यवहार में, सम्बन्ध में बाबा हमारा साथी है, आठों शक्तियाँ भी साथ हैं, हाज़िर हैं। अष्ट शक्तियाँ मेरे सामने हाज़िर न रहें तो किसके सामने होंगी? ऐसे ही वैल्यूज़ हैं। सर्वशक्तिवान की शक्ति वैल्यूज़ के रूप में मेरे सामने हाज़िर रहे, यह शान है। अपनी किसी नेचर (स्वभाव) के वश नहीं रहना। जैसे रात को देर से सोना फिर सुबह को समय पर न उठना, यह शोभा नहीं है। ऐसे जीवन की कीमत नहीं है। अमूल्य जीवन तो अभी बनेगा। बाबा कहते हैं, प्रत्यक्षफल यह है कि योगी की चाल-चलन सेवा करती है। सेवा में इतना व्यस्त नहीं हैं जो प्रैक्टिकल चेहरे-चलन से सेवा न करें। साक्षी हो देखें तो बाबा का हर एक बच्चा कोई न कोई सेवा करता है। मैं कुछ नहीं करती हूँ परन्तु खुश होती हूँ, सब कर रहे हैं।

प्रश्नः- शिव बाबा से प्यार का सबूत क्या है?

उत्तरः- जितना बाबा से कनेक्शन होगा उतनी करेन्ट आती है जैसे बिजली की करेन्ट एकदम पकड़ लेती है। हममें इतनी करेन्ट हो जो कोई भी नज़दीक आये, उसको भी करन्ट आ जाये। ऐसे जो शब्द हैं ना, उनकी गहराई में जाते हैं। कनेक्शन बुद्धि की

लाइन क्लीयर करता है। मेरे प्रति किसी आत्मा की असन्तुष्टि है और मैं उसकी परवाह न करूँ, तो यह भी भूल है इसलिए सब सन्तुष्ट रहें। सिर्फ सफाई, सादगी, सच्चाई की नकल करो, इसी से कशिश होगी। बाबा से प्यार माना जो बाबा ने कहा है, वही किया है। अभी भी जो बाबा कहता है, वही करना है, यह बात अच्छी तरह से दिल में याद आ रही है। मैं आत्मा शरीर में हूँ, कैसी हूँ, कैसे यहाँ पहुँची हूँ, सम्भव नहीं लगता था, सम्भव हो गया, कुछ सोचे बिगर। बार-बार गुलजार दादी के शब्द याद आते हैं, जो बाबा ने कहा है वही किया है। कैसे करूँ? या यह क्या करते हैं? यह कभी ख्याल नहीं आया है, तभी सेफ हूँ, साफ हूँ।

प्रश्नः- कोई नाराज न हो, इसके लिए क्या करना है?

उत्तरः- सारा दिन प्रभु को क्या पसंद आता है? वो समझो, वो करो, तो स्वतः आपको और दूसरों को अच्छा लगेगा। न अच्छा लगता है तो भी बिचारों का दोष नहीं है। कोई भी कारण से, कोई किसी से नाराज़ न हो जाये, उसके लिये शुभ भावना रखनी है। किसी भी तरीके से मुझे प्रभु पसंद बनना है। मेरी अपनी पसंद कुछ नहीं है। जो प्रभु को अच्छा लगता है वो सबको अच्छा लगेगा। उसमें भी कोई सतोगुणी होगा तो पूरा अच्छा लगेगा, रजोगुणी होगा तो थोड़ा लगेगा, तमोगुणी होगा तो नहीं लगेगा। इसमें मैं क्या करूँ? बाबा क्या करता है? ऐसे ही बैठा है जैसे पहले से बैठा है, समझते हुए भी ज़रा भी बाबा के चेहरे पर फर्क नहीं पड़ता है। तो करनकरावनहार बाबा का पार्ट वन्डरफुल है।

प्रश्नः- दुआएँ लेने के लिए क्या करें?

उत्तरः- मनुष्य को दो रोटी ही तो चाहिएँ, सादा कपड़ा पहनना और शिवबाबा के गुण गाना। सिर्फ गुण नहीं गाना पर ऐसा गुणवान, गायन योग्य बनना है। बाबा कहते हैं, मेरे बच्चे औरों की कमज़ोरी देखने में होशियार हैं, पर अपनी कमज़ोरी देखने में कमज़ोर हैं। चलो, जो बीता सो ड्रामा। सीख रहे हैं, सम्पूर्णता को पाने के लिए। अब से आगे शुभ चिंतन में रहना है, यह हमारे लिये दवाई है। अपने लिये अच्छी-अच्छी बातें चिंतन में ले लो, बाकी कोई चिंता नहीं करो। सबके लिये शुभचिंतक बनो। ईश्वरीय स्नेह का सहयोग दो तो दुआयें मिलती हैं। हमारा जीवन ऐसा हो जो औरों को भी अपना जीवन बनाना सहज लगे। त्याग और तपस्या के साथ कोई भी कार्य, कितना भी करो पर खुशी से करो, बोझा नहीं है। भगवान के घर का खाते हैं तो सेवा तो करनी ही है पर सी फादर, फॉलो फादर। धीरज सिखाए बिना मन शान्त नहीं होता, चूँ-चूँ करता ही रहेगा इसलिए मन को पहले सुधारना है। प्रेम से सबके साथ व्यवहार करना है।

प्रश्नः- अलबेलेपन का कारण क्या है?

उत्तरः- घर जाने का समय है इसलिए अब कोई अलबेला न रहे। अलबेलापन छोड़ें, इसके लिए बाबा को कहती हूँ, कुछ करो ना बाबा। अलबेलेपन का भी कारण है ईर्ष्या, स्वमान की कमी, एक्यूरेट पुरुषार्थ करने की भावना नहीं है। तो यह ख्याल रहता है कि अभी नहीं बनेंगे तो कब बनेंगे। समय थोड़ा है, पुरुषार्थ में नियमित रहना, यज्ञ मर्यादाओं अनुसार चलना तथा ईश्वरीय स्नेह से सहयोगी रहना भाग्य है। कारोबार में आते भारी न होना, यह भी भाग्य है। कोई बात है तो उसे बता के यानि स्पष्ट करके हलके हो जाओ और कभी किसी के लिए भी ना उम्मीद न बनो। यह तो कभी नहीं सुधरेगा, यह ख्याल भी न आए, यह पाप है। संकल्प शुद्ध, श्रेष्ठ, हिम्मत वाला, उमंग वाला हो। हर एक का पार्ट अपना है। संगमयुग में, परिवर्तन होने के इस समय में चाहे तो कोई क्या से क्या बन सकता है, सबकुछ सम्भव है। मैं ज्ञान सूर्य का बच्चा 24 ही घण्टा चमकता हुआ सितारा हूँ। ऐसा सितारा ग्रहचारी उतारने वाला होता है, यदि नहीं चमकता है तो कुछ ग्रहचारी है। जैसे चन्द्रमा की चढ़ती कला, उतरती कला होती है, हर एक पूछे, मैं कौन?

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 4

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

हम जानते हैं कि यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय भविष्य विश्व के होवनहार श्रेष्ठ पदाधिकारियों का निर्माण करने के लिए रचा गया है। हम आत्माओं में से ही कई आत्मायें श्रेष्ठ राज्य अधिकारी बनेंगे और इसी संदर्भ में हमें विचार करना होगा कि हमारी उस समय की ज़िम्मेवारी क्या होगी और उसे हम पूरा कैसे करेंगे, इसके लिए यह लेख लिख रहा हूँ।

हम जानते हैं कि शिवबाबा हम दैवी आत्माओं को विश्व के राज्य कारोबार के लिए निमित्त बनाते हैं जिसे आज तक भी लोग रामराज्य कहकर याद करते हैं। ऐसा श्रेष्ठ राज्य कारोबार करने के लिए सर्वप्रथम समस्या का समाधान करने की शक्ति चाहिए। योग से हमें अष्टशक्तियाँ प्राप्त होती हैं जिसके फलस्वरूप अगर कोई समस्या या उलझन आती है तो उस समय निर्णय करना आसान हो जाता है। अगर उस समय समस्या का समाधान नहीं कर पाते तो मनोबल कम हो जाता है, मानसिक आघात होता है। यह मानसिक आघात इतना ज़बर्दस्त होता है कि कई आत्मायें ऐसे समय पर आत्महत्या कर लेती हैं या अवसाद (depression) का शिकार हो जाती हैं। हम सब जानते हैं कि भारत के कई किसानों ने कर्ज़ के बोझ के कारण आत्महत्यायें कर ली थीं जिस कारण कमाने वाले व्यक्ति के जाने के बाद उनके परिवार पर और अधिक कर्ज़ का बोझा हो गया।

इसलिए हमें अपने आपमें विश्वास पैदा करना होगा। अगर हममें आत्मविश्वास का अभाव होगा तो कइयों की शाब्दिक टीका-टिप्पणी का हमारे ऊपर गलत प्रभाव पड़ सकता है और हम अपना आत्मविश्वास खो बैठते हैं। देखा गया है कि दस मनुष्यों में से एक मनुष्य मानसिक तनाव से दु:खी होता है और उस समय वह हताश, निराश हो जाता है। शिवबाबा ने हमें परिस्थिति के आगे परवश ना होते हुए उस पर विजयी होना सिखाया है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हमारे प्यारे ब्रह्मा बाबा हैं। उन्होंने हर प्रकार की समस्या में विचलित हुए बिना समाधान किया और समाधानस्वरूप बने। प्यारे शिवबाबा हमें फॉलो फादर का पाठ पक्का कराते हैं। ब्रह्मा बाबा ने यज्ञ की स्थापना के समय किस प्रकार से समस्याओं का निराकरण एवं समाधान किया इस पर हम विचार कर सकते हैं। जैसे सिंध हैदराबाद में जब यज्ञ की स्थापना हुई तो वहाँ पर पवित्रता के कारण कोर्ट केस हुआ, पिकेटिंग हुई या विरोध हुआ, तो ऐसी हर समस्या में ब्रह्मा बाबा ने रास्ता निकाल कर समस्या का निराकरण किया।

जब बाबा ने सिंध-हैदराबाद से कराची में स्थानांतरण किया तो उनके सामने भवन की बहुत बड़ी समस्या आई क्योंकि हैदराबाद में तो बाबा का खुद का मकान था। कराची में बाबा ने ज्यादातर मकान किराये पर ही लिए और जब 1950 में बाबा भारत आये तब उनको छोड़ना सहज हुआ। सिंधी भाई-बहनें जिनके अपने मकान थे उन्हें विभाजन के समय बहुत कम कीमत पर वे बेचने पड़े जिससे बहुत आर्थिक नुकसान हुआ।

सन् 1947 में विभाजन के समय ब्रह्मा बाबा यज्ञ सहित कराची में रहे। उस समय जब कि चारों ओर खून की नदियाँ बह रही थीं, ब्रह्मा बाबा ने यज्ञ को बचाकर रखा और यज्ञ की सेवाओं का विस्तार किया। हम समझ सकते हैं कि कैसे शिवबाबा की मदद से ब्रह्मा बाबा ने यह कार्य किया। बाद में बहनों के रिश्तेदारों आदि के कहने पर यज्ञ का स्थानांतरण भारत में माउंट आबू में हुआ। उस कार्य के लिए भी ब्रह्मा बाबा ने पहले बड़ी दीदी को भारत में भेजा और योग्य स्थान लेने के निमित्त बनाया। बड़ी दीदी ने

माथेरान आदि स्थानों पर चक्कर लगाया और फिर अहमदाबाद पहुँचे और वहाँ से माउंट आबू आये। ब्रह्मा बाबा ने भी इसे योग्य समझा और इसे पक्का किया इस प्रकार सारा यज्ञ कराची से माउंट आबू में स्थानांतरित हुआ।

आबू में सब बृजकोठी में रहने आये पर वहाँ भटकती आत्माओं (Evil Souls) आदि की परेशानी का बाबा को सामना करना पड़ा। इसके बाद फिर भरतपुर कोठी और कोटा हाऊस में रहे परंतु वहां रहते-रहते भी बहुत सी समस्यायें आईं। वहां की एक कोठी राज्य सरकार ने अपने मंत्रियों के लिए चुनी थी और जहां बाबा रहते थे वह मुख्यमंत्री के लिए चुनी थी। इस कारण भरतपुर कोठी और कोटा हाऊस आदि सरकार के कब्जे में चले गये और सरकार के द्वारा हमें अनेक नोटिस आते रहे।

मैं ये सब बातें इसलिए विस्तार से लिख रहा हूँ ताकि सभी को पता चले कि ऐसी बड़ी-बड़ी समस्याओं का निराकरण प्यारे ब्रह्मा बाबा ने कैसे किया। जब-जब मंत्री से नोटिस आता था तो दादा विश्व किशोर जयपुर जाकर उसकी समयावधि बढ़ाकर लाते थे। अंत में दादा विश्व किशोर जब दिसम्बर-जनवरी में जयपुर गये तो मंत्री ने कह दिया, मैं आपको यह अंतिम चेतावनी देता हूँ कि आप दो

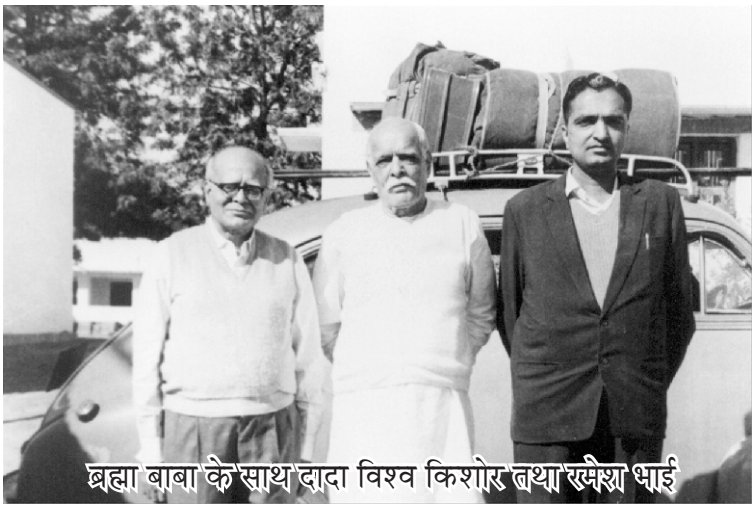
ब्रह्मा बाबा के साथ दादा विश्व किशोर तथा रमेश भाई

मास के अन्दर कोठी खाली कर दीजिए, अगर नहीं की तो सिरोही के ज़िला कलेक्टर द्वारा इसे ज़बर्दस्ती खाली करवाऊंगा।

उस समय माउंट आबू में कोई अच्छे मकान नहीं मिल रहे थे। पोखरण हाऊस जो वर्तमान में पाण्डव भवन है वह किसी को पसंद नहीं आता था इसलिए बाबा ने दादा विश्व किशोर को फिर से लोक निर्माण विभाग (Public Works Department) के तत्कालीन मंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया जी के पास भेजा। दादा ने मंत्री जी को फिर से दो मास की अवधि बढ़ाने के लिए कहा तो मंत्री जी ने कहा कि अगर आप को मैं अवधि और बढ़ाकर दूँ तो हमारे मुख्यमंत्री जी नाराज़ होंगे क्योंकि इस कोठी की मरम्मत आदि करानी है। इसलिए मैं आपको 24 घंटे की अवधि देता हूँ और अगर इस अवधि में इसे खाली नहीं करेंगे तो मैं सिरोही कलेक्टर के द्वारा आपका सारा सामान बाहर निकलवा दूँगा। मंत्री जी के कहने के बाद दादा ने बाबा से पूछा कि बाबा, अब क्या करें? उस समय भी ऐसी विकट समस्या का समाधान बाबा ने हिम्मत ना हारते हुए किया और दादा विश्व किशोर को कहा कि पटना में बाबा का बच्चा हीरालाल जालान है, वह राष्ट्रपति का दोस्त है, उनके द्वारा राष्ट्रपति से एक निवेदन-पत्र (Request Letter) लेकर फिर आप जयपुर में मंत्रीजी के पास जाओ। तो दादा ने पटना फोन किया और दूसरे दिन सुबह के हवाई जहाज से हीरालाल जालान जी दिल्ली पहुँचे। दादा ने उनका वहां स्वागत किया और दोनों फिर राष्ट्रपति भवन गये। राष्ट्रपति जी से मिलने का जब समय मांगा तो उनके सचिव ने कहा कि राष्ट्रपति जी बिना पूर्व-अनुमति (Appointment) के किसी से भी मिलते नहीं हैं। इसलिए दोनों

राष्ट्रपति जी के कार्यालय के बाहर ही बैठ गये तो देखा कि 5-10 मिनट में ही राष्ट्रपति जी बाहर आये। जब उन्होंने हीरालाल जी और दादा को देखा तो उन्होंने हीरालाल जी को सीधा ही अन्दर बुलाया क्योंकि हीरालाल जी और श्री राजेन्द्र प्रसाद जी दोनों ही बचपन के दोस्त थे और दोनों ने ही भारत की आजादी के आंदोलन में कदम से कदम मिलाकर काम किया था। जालान जी ने माउंट आबू के किराये के मकान को खाली करने की समस्या के बारे में सब समाचार बताया और राष्ट्रपति जी से कहा कि इनको कम से कम दो मास की अवधि बढ़ाकर दी जानी चाहिए। राष्ट्रपति जी ने अपने सचिव के द्वारा राजस्थान के मंत्री के नाम एक चिट्ठी लिखवाई और वह टाइप होते ही उन्होंने उस पर हस्ताक्षर किये। इसे लेकर जालान जी और दादा दोनों ही जयपुर मंत्री जी के पास गये। उस समय शाम हो गई थी और सचिवालय बंद होने से थोड़े समय पहले ही ये मंत्रीजी के पास पहुँचे और उनसे मिलने के लिए चिट्ठी भेजी। मंत्रीजी ने उनसे पूछा कि कोठी अब तक खाली की या नहीं, तो दादा ने कहा कि हमारा एक मित्र है वह आपसे कुछ कहना चाहता है और ऐसे कहकर जालान जी को अन्दर बुलाया। जालान जी ने राष्ट्रपति जी का लिफाफा उन्हें दिया। राष्ट्रपति जी की चिट्ठी पढ़कर मंत्रीजी शांत हो गये और अंतिम बार दो महीने की अवधि बढ़ाकर दी। फिर दादा और जालान जी आबू आये।

इस विकट परिस्थिति का विशेष समाचार सभी यज्ञ वत्सों को बताया गया इसलिए सब यज्ञ वत्सों ने पोखरण हाऊस में अपना आवास स्थानांतरित करने के लिए हाँ कह दी। पोखरण हाऊस पहले बाबा ने किराये पर लिया और फिर उसे यज्ञ की सम्पत्ति के रूप में खरीद कर लिया। पोखरण हाऊस पोखरण के राजा का ग्रीष्मकालीन घर (Summer House) था परंतु इतना अच्छा नहीं था। आज जहां शान्ति स्तम्भ है वहां पर दो टेनिस कोर्ट थे और राजा को घुड़सवारी का बहुत शौक था इसलिए जहां कभी ईशु दादी जी का ऑफिस रहा, वहां पर घोड़ों के पानी पीने का स्थान था। धीरे-धीरे ब्रह्मा बाबा ने सुविधानुसार वहाँ का प्रबंध किया और आज वह पोखरण हाऊस यज्ञ का मुख्यालय बन गया है। इस प्रकार ब्रह्मा बाबा ने समय प्रति समय जो भी समस्यायें आईं, उनका निवारण किया, कभी भी मूँझे नहीं।

जब दिल्ली का पांडव भवन ट्रस्ट में खरीद किया और उसे खरीदने के बाद मैं मधुबन गया तब अव्यक्त बापदादा की पधरामणि हुई थी। मैंने बापदादा को भवन खरीदने का समाचार सुनाया और पूछा कि बाबा मकान का नाम क्या रखें? बापदादा ने जवाब दिये बिना मुझसे ही पूछा कि क्या नाम रखना चाहिए? मैंने बाबा को कहा कि पाण्डव भवन नाम होना चाहिए। फिर बाबा ने कहा, बहुत अच्छी बात है, आबू का पाण्डव भवन संगमयुग का मुख्यालय रहेगा और दिल्ली का पाण्डव भवन भविष्य के कारोबार के लिए मुख्यालय रहेगा।

हमारे पास भी समस्यायें तो आयेंगी ही परंतु हमें योगयुक्त, युक्तियुक्त होकर यथार्थ निर्णय लेकर हर समस्या का समाधान करना है। समस्या समाधान के लिए सबसे ज़रूरी है हमारी ज्ञान-योग की धारणा। जितनी-जितनी हमारी धारणायें पक्की होंगी, उतना ही हमारा निर्णय स्पष्ट, योग्य और दूरांदेशी भी होगा। ईश्वरीय सेवा के कारोबार में समस्या समाधान करना आना बहुत ज़रूरी है क्योंकि आज की दुनिया में समस्यायें बहुत बढ़ती जा रही हैं। सर्वशक्तिवान बाबा सर्वव्यापी नहीं है परंतु माया सर्वव्यापी है। थोड़े समय पहले अव्यक्त बापदादा ने मुझे कहा था कि अंतिम समय जो भी समस्यायें आयेंगी उसके लिए बच्चों को तैयार होना चाहिए क्योंकि उस समय खून की नदियाँ बहेंगी, भयंकर बीमारियाँ होंगी, प्रकृति के पाँचों तत्वों का विकराल रूप होगा, चारों ओर अंधेरा होगा, ट्रेन्स, हवाई जहाज आदि नहीं चलेंगे और भी अनेक

प्रकार की समस्यायें होंगी। ऐसे समय पर हमें अपने मनोबल के आधार पर ही समस्या का समाधान करना पड़ेगा।

अभी भी यज्ञ में विभिन्न प्रकार के कारोबार होते हैं जिनमें कई प्रकार की अड़चनें आती हैं। उनमें बापदादा की मदद मिलती है तब महसूस होता है कि बाबा हमें अनुभवी बना रहे हैं। भविष्य में 2500 वर्ष जब हम राज्य करेंगे तब अनेक प्रकार की समस्यायें आयेंगी। कुछ समस्यायें मीठी, कुछ खट्टी तो कुछ कड़वी होंगी। समस्याओं का समाधान कैसे करना है, इसके लिए बाबा हमें तैयार कर रहा है।

शास्त्रों में कथा है, राजा दशरथ ने जब ऐलान किया कि कल राजकुमार राम का राज्याभिषेक होगा तो यह सुनकर उसी रात रानी कैकेयी ने राजा दशरथ से दो वरदान मांगे जिनमें एक था कि श्रीराम को चौदह वर्ष का वनवास और दूसरा भरत को राज्यभाग्य मिले। बाद में राजा दशरथ ने श्रीराम के वनवास विरह के कारण देहत्याग कर दिया। इसका कारण था कि जो संकट उनके सामने आया उसे वे सहन नहीं कर सके और शरीर त्याग दिया।

सतयुग-त्रेतायुग में हमारी प्रजा की जो समस्यायें होगी उनका निवारण करने के लिए आत्मबल व बुद्धिबल को मजबूत बनाना पड़ेगा और ये सब तैयारियाँ हमें संगमयुग में ही करनी पड़ेंगी। जब भी हमारे सामने कोई समस्या आये तो हम सोचें कि हमारे ब्रह्मा बाबा-मातेश्वरी जी इस समस्या का समाधान कैसे करते। हमारे प्यारे ब्रह्मा बाबा, मातेश्वरी जी तथा दादियों ने किस तरह समस्याओं का समाधान एवं निराकरण किया, इस पर एक किताब लिखी जा सकती है।

उम्मीद करता हूं कि आप सभी भी हर प्रकार की परिस्थिति में उत्तीर्ण बनेंगे। इन्हीं शुभ आशाओं के साथ यह लेख लिख रहा हूँ। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

दिसम्बर, 2013 के लेखों ने समाँ बाँध 'ज्ञानामृत' को नया सौंदर्य प्रदान किया है। ब्र.कु.रमेश भाई के क्रमवार लेख 'ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की जरूरत' से जो जानकारियाँ मिली वे दुर्लभ प्राप्ति महसूस हुई। 'लाभकारी होती है कड़वी दवाई' लेखिका बहन की यह दवाई काफी मीठी लगी। 'क्रोध को पराजित करो' लेख बड़ा हृदयग्राही महसूस हुआ।

– शम्भूप्रसाद ढौंडियाल, जयपुर

पिछले तीन वर्षों में मैंने ज्ञानामृत के कई लेख पढ़े। सब ज्ञानवर्धक एवं ऊर्जावर्धक होते हैं। लेख पढ़ने से ही कई समस्याओं का समाधान हो जाता है। पत्रिका पूर्णतया विज्ञापन रहित है। ऐसी पत्रिका मैंने 'ज्ञानामृत' व 'अखण्ड ज्योति' देखी। नवम्बर अंक में 'कामजीत जगतजीत' अच्छा लगा। भारतीय समाज व संस्कृति के लिए यह अमृत है। लेखक व संपादक को धन्यवाद।

– ब्र.कु.चण्डी प्रसाद शर्मा, दिलशाद कालोनी (दिल्ली)

नवम्बर, 2013 अंक पढ़कर भरपूर बौद्धिक आनंद प्राप्त हुआ। 'प्रश्न हमारे उत्तर दादीजी के' पढ़कर ज्ञान में वृद्धि हुई। भगवान से बातें करनी हैं तो क्या करें?' इस विषय पर दादी जी ने बहुत अच्छा प्रकाश डाला है। 'कामजीत जगतजीत' इस विस्तारपूर्ण लेख ने बुद्धि को खाद्य दिया और हृदय को छू लिया। काम महाशत्रु है और दुख देने वाला है यह वैश्विक सत्य इसमें प्रतिपादन किया गया है। 'दिल से देते चलो दुआयें' लेख भी विचार प्रवर्तक है तथा विस्तार से लिखा हुआ है। दुआओं में है जादुई शक्ति और दुआओं का सम्बन्ध दिल के पवित्र संकल्पों से है, यह पढ़कर विचारों को गति मिली। 'ज्ञानामृत' पत्रिका दिन-प्रतिदिन अधिक लोकप्रिय हो, यही शुभकामना है।

– ब्र.कु.डा.वामनराव पाठक, भोपाल

भाई-बहनों के प्रश्न, दादी हृदयमोहिनी के उत्तर

प्रश्नः- स्वयं सदा निर्विघ्न रहने का सहज पुरुषार्थ क्या है?

उत्तरः- देखो, किसी से गलती होती है तो उसे क्षमा करें। प्यार से समझाओ तो समझ जाते हैं। न सुनने वाला भी प्यार से सुनने लगेगा। जब हम छोटे थे, बाबा हमें हर मास के लिए टॉपिक देते थे कि इस मास में यह परिवर्तन करना है, वह हम करते रहे। विस्तार को सार में लाना, यही निर्विघ्न बनने का सहज पुरुषार्थ है।

प्रश्नः- संगठन को निर्विघ्न कैसे बनायें?

उत्तरः- किसी से गलती होती है तो उसे बढ़ाओ नहीं क्योंकि वह दूसरे को सुनायेगा, उसके प्रकम्पन वायुमण्डल में फैलेंगे। उम्मीदें सबमें रखनी हैं। हरेक को प्यार से बदलना है। हरेक के अन्दर गुणों को देखने का एवं उसके शुद्ध परिवर्तन का चश्मा पहनो तो वह भी बदल जायेगा।

प्रश्नः- हम सेवा करते हुए एक-दूसरे के साथ हलके रहें, उसकी विधि क्या है?

उत्तरः- दोनों मिलकर संकल्प करें कि हम एक होकर दिखायेंगे। एक-दूसरे के साथी बन जाएँ, एक-दूसरे को समझने की कोशिश करें और एक-दूसरे को सम्मान से देखें।

प्रश्नः- कभी-कभी उमंग-उत्साह कम हो जाता है और आलस्य, अलबेलापन आ जाता है, उसका कारण क्या है?

उत्तरः- जो उमंग-उत्साह वाले हैं, उनके संग रूहरूहान करो तो आप में भी परिवर्तन आ जायेगा। उसका वह विशेष गुण धारण कर लो। जब दूसरे अलबेले को देखते हैं तो खुद में भी अलबेलापन आता है।

प्रश्नः- बिना कारण के खुशी गुम क्यों होती है?

उत्तरः- मन में व्यर्थ संकल्प हैं। अगर किसी की बात दिल में चुभ जाती है तो व्यर्थ विचार चलते हैं। बाबा ने कहा है कि शुभ सोचना लेकिन फिर भी बुद्धि व्यर्थ तरफ चली जाती है। उसके लिए अपनी कन्ट्रोलिंग पॉवर को बढ़ाओ। योगाभ्यास के बाद सोचो कि बाबा ने हमारे जीवन के लिये कौन-सी बातें कही हैं? सन्तुष्टमणि बन जाओ और दूसरों को सन्तुष्ट करो। दूसरे को बदलने से पहले अपने आपको बदलो। शुभ भावना बहुत काम करती है। जो वाणी से नहीं बदलता उसे वायब्रेशन्स से ठीक करो। बाबा हमें यही पाठ पढ़ाते थे कि गुणग्राही बनो, गुणों का ही वर्णन करो। कैसा भी है, बाबा का तो बना है ना! कुछ तो विशेषता उसके अन्दर है ना, यह शुभ भावना रखो। यह बदलेगा ही नहीं, यह सोचकर उसकी तकदीर को लकीर नहीं लगाओ। मम्मा ने हरेक

को बदला, मम्मा ने बहुत मेहनत की। मम्मा ने अच्छे-अच्छे उदाहरणमूर्त बनाये। मम्मा सबसे प्यार से चलती थी। मम्मा को देखकर मम्मा जैसा बनने का उमंग आता था। दिलशिकस्त नहीं होते थे कि हम ऐसा बन ही नहीं सकते। मनुष्य चाहे तो क्या नहीं बन सकता? बाबा ने कहा और मैंने किया। बाबा की मुरली का महत्व रखकर हमें करना ही है।

प्रश्नः- पुराने संस्कार इमर्ज हो जाते हैं तो क्या करें?

उत्तरः- वह ड्रामा में हमारा पेपर होता है जिससे पता पड़ता है कि हमारा फाउण्डेशन कच्चा है। अगर पुरुषार्थ में फर्क पड़ता है तो संस्कार को पीठ कर परिवर्तन करें। अपने ऊपर ध्यान दें। बाबा से प्यार सबका है। उस समय बाबा के प्यार को याद करें, बातों को याद नहीं करें। अपने दिल में बाबा को बिठा लें तो भरी हुई दिल में और कोई बैठ नहीं सकता। दिल में बाबा बैठे हैं तो हम अकेले नहीं हैं, उलटे कर्म नहीं होंगे।

प्रश्नः- बाबा की दिल पसंद सेवा क्या है? बाबा सेवा के क्षेत्र में किन-किन बातों को देखते हैं?

उत्तरः- बाबा देखते हैं, सेवा करते समय कोई मिलावट तो नहीं, अगर नाम कमाने के लिये सेवा करते तो वह सेवा बाबा को पसंद नहीं आती। बाबा देखते हैं, दिल में क्या रखकर सेवा की, सेवा भाव या लालच भाव? सच्ची दिल से करने वालों पर ही साहेब राज़ी होते हैं। जिस भाव से सेवा करते उसके वायब्रेशन जिज्ञासुओं को भी आते हैं। स्वार्थ भाव वाली सेवा में थोड़े समय के लिए वे भी उमंग-उत्साह से सहयोगी बनेंगे, बाद में धोखा देंगे।

प्रश्नः- दादी जी, बाबा के दिल में हम कैसे बैठें?

उत्तरः- बाबा का दिल हमसे खुश रहेगा तो हम बाबा के दिल में बैठेंगे। कोई से दिल खुश नहीं होती तो क्या कहते हैं? कहते हैं, इसको निकालो। तो बाबा की दिल हमसे खुश हो तब हम बाबा के दिल में बैठेंगे। ❖

'पहला सुख...' पृष्ठ 21 का शेष

बचपन में मोटापा अकाल मृत्यु का और वयस्कों में मोटापा विकलांगता का कारण बन रहा है। विश्व में कुपोषण की भेंट में अधिक वजन से मरने वालों की संख्या ज्यादा है। मोटापे का कारण है, हम जितनी कैलोरी खाते हैं उतनी कार्य में नहीं लगती है। यह आश्चर्य की बात है कि एक ही समाज में, एक ही घर में एक व्यक्ति मोटापे से जूझ रहा है और दूसरा कुपोषण से। इस समस्या से निपटने के लिए आवश्यक है कि हम आहार की मात्रा निश्चित करें और शारीरिक मेहनत को महत्व दें। ❖

शिवपिता ने जीवन धन्य-धन्य कर दिया

ब्रह्माकुमार यज्ञेश कुमार, नवानरोडा, अहमदाबाद

जब मैं 9 साल का था तब मुझे शिवबाबा का ज्ञान मिल गया। परिवार में माता-पिता और बहन सभी ज्ञानमार्ग में चल रहे हैं। मैं यह बात दिल से ज़रूर कहूँगा कि मैं अपने पैरों से नहीं चल रहा हूँ बल्कि बाबा की गोदी में ही पल रहा हूँ। पूरा दिन स्कूल की पढ़ाई और ट्यूशन में व्यस्त रहता हूँ। अमृतवेले उठकर राजयोग का अभ्यास करता हूँ। रोज़ मुरली क्लास करता हूँ। ज्ञानबिन्दु भी डायरी में नोट करता हूँ लेकिन थकता नहीं हूँ क्योंकि बाबा मेरे साथ हैं। हमेशा खुशी में ही रहता हूँ, कभी भी मूड ऑफ होता ही नहीं है। कभी किसी को दुख नहीं देता हूँ, रोज़ बाबा को पत्र भी लिखता हूँ। लौकिक व अलौकिक परिवार में, स्कूल में, जहाँ भी जाता हूँ, सर्व आत्माएँ बेहद प्यार करती हैं। सेन्टर पर हर गुरुवार को क्लास के बाद किसी ना किसी विषय पर प्रवचन करता हूँ। स्कूल में भी हमेशा प्रथम आता हूँ। स्पर्धाओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी प्रथम आता हूँ। मैंने आज तक 22 सर्टिफिकेट, 10 पदक, 1 ट्रॉफी और 25 उपहार प्राप्त किए हैं।

शिवपिता मेरी हर बात सुनते हैं और मुझे मदद भी बहुत करते हैं। मेरा किसी से झगड़ा नहीं होता है। दोस्तों को रोज़ ज्ञान देता हूँ। मुझे विश्वास है कि बाबा मेरे द्वारा बहुत ही सेवा करायेंगे। मैंने तय कर लिया है कि मुझे मेरा जीवन ईश्वरीय सेवा में सफल करना ही है। मई, 2013 में शान्तिवन में बाल व्यक्तित्व विकास शिविर में मैंने भाग लिया था। मैं एंजिल ग्रुप में था और वक्तव्य स्पर्धा में पूरे भारत में प्रथम स्थान लिया था। वो दिन मेरे लिये गौरव का दिन था जिसे याद करके मैं आज भी गद्‌गद् हो जाता हूँ। मैं दिल से बाबा को यही कहता हूँ कि बाबा, मैं आपका बना तब तो आपने मुझे इतना योग्य बना दिया।

मेरे दिल से यही शुभ भावना आप सभी के प्रति निकलती है कि आप भगवान के बनकर तो देखो, भगवान आपका न बन जाये तो कहना। ❖

वेलेंटाइन डे पर विशेष...

प्रेम के सागर का प्रेम

● ब्रह्माकुमारी किरण, मुंबई (बोरिवली)

प्रेम के बिना जीना मुश्किल ही नहीं, असंभव है। आज संसार में हर प्राणी को आवश्यकता है प्रेम की। रोटी, कपड़ा, मकान के बाद अगर कुछ चाहिए तो वो है प्रेम। हम मनुष्य आत्माओं को शान्ति, शान्तिधाम में मिलेगी, सुख सुखधाम में मिलेगा परंतु आज इस समय क्या? इस समय हरेक को, हर बात में, हर संबंध में प्रेम चाहिए।

प्रेम का दिखावा

आज से 100 वर्ष पूर्व परिवारों में पारस्परिक संबंधों में प्रेम था। प्रेम आज भी है परंतु उस प्रेम में परिवर्तन आ चुका है। पहले के ज़माने में अनाज, कपड़े, जूतों की दुकानें होती थी, आज उन्हीं चीज़ों के शोरूम बन गए हैं। क्यों? क्योंकि इन आवश्यक चीज़ों के साथ दिखावा जुड़ गया है। उसी तरह प्रेम तो पहले भी था और आज भी है लेकिन प्रेम में मिलावट हो चुकी है। अन्य चीज़ों की तरह उसमें वास्तविकता नहीं रही है इसीलिए शो (दिखावा) करना पड़ता है। प्रेम की हज़ारों कहानियाँ, लाखों गीत, लाखों फिल्में बनी हैं परन्तु परस्पर प्रेम नहीं रहा है।

विकृत प्रेम

आज की दुनिया में प्यार झूठा, स्वार्थ का, दिखावे का, सौदेबाज़ी का, काम निकालने का और चमड़ी-दमड़ी का है। ऐसे झूठे प्यार का दम भरने वाले लोग हताश, निराश और उदास दिखायी देते हैं। सच्चे प्यार की कमी ही झूठा अर्थात् ज़हरीला बना देती है। आज सर्वत्र विकृत प्रेम का ही बोलबाला है। यह प्रेम दैहिक सुंदरता पर आधारित है। प्रेम को काम वासना का पर्याय मान लिया गया है। वासनायुक्त मनुष्य प्रेम के नाम पर नीच से नीच कर्म करने से भी परहेज नहीं करता। नीच कर्मों की दास्तान अखबारों में आए दिन छपती रहती है। जब प्रेम करने वाला स्वयं को देह मानकर दूसरों को भी दैहिक दृष्टि से देखता है तब उसका प्रेम 5 तत्वों के शरीर में अटक कर रह जाता है। यह प्रेम की अशुद्धि है। अगर प्रेम करने वाला स्वयं को आत्मा निश्चय कर दूसरों को भी आत्मिक दृष्टि से देखे तो प्रेम पवित्र हो जाता है।

सच्चा प्रेम

सच्चा प्रेम पारस के समान होता है, श्रेष्ठ वृत्ति वाला और विकारों से पूर्णतया रहित होता है। सच्चा प्रेम झुकना सिखाता है, उसमें अहम् भाव नहीं होता। जिनसे प्रेम होता है उनकी कमी अपनी कमी महसूस होती है, उनकी काँटे जैसी बातें भी फूल महसूस होती हैं। सच्चा प्रेम मर्यादित, स्वानुशासित होता है, प्रेम से आत्मा सुंदर हो जाती है अर्थात् उसके कर्म सुंदर हो जाते हैं। किसी कर्म में शांति, किसी में शक्ति और किसी में ज्ञान की आवश्यकता होती है लेकिन प्रेम तो हर कर्म में चाहिए तभी तो वह कर्म सुंदर कहलाएगा। सुंदरता से प्रेम नहीं, प्रेम से सुंदरता दिखाई दे। कहा जाता है, यदि सुख में कोई याद आए तो समझो हम उनसे प्रेम करते हैं और दुख में कोई याद आए तो समझो वो हमसे प्रेम करते हैं। हम सभी को दुख में 'परमात्मा' ही याद आते हैं क्योंकि वो सही अर्थ में हमसे प्रेम करते हैं।

ईश्वरीय प्रेम

परमपिता परमात्मा हम बच्चों से सच्चा प्रेम करते हैं। तो क्यों न हमें भी उस प्रेम के सागर को अपना प्रिय बना लेना चाहिए? ईश्वर से प्रेम एक ऐसी शक्ति है जिससे हमारी दृष्टि किसी भी वस्तु या व्यक्ति पर पड़ेगी तो उन्हें भी प्यार की भासना आयेगी। जिसके अंदर परमात्म प्यार होगा वह हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ-कामना, रहम की भावना रखेगा, जैसे बाबा हम बच्चों के प्रति रखते हैं। हम कैसे भी क्यों न हों, वे हमारी कमी-कमज़ोरी निकालकर अपने समान बना लेते हैं। परमात्म प्यार ऊँचा है, श्रेष्ठ है, उनका प्यार पात्र आत्माओं

को ही प्राप्त होता है। भगवान से प्यार करने से पहले हमें खुद से प्यार करना पड़ेगा। जिसने खुद से और खुदा से प्यार करना सीख लिया मानो उसने सब कुछ सीख लिया।

आत्माएँ कभी पतित तो कभी पावन बनती हैं, कभी प्रेम तो कभी नफरत भी करेंगी लेकिन परमात्मा सदैव प्यार के सागर हैं। जब हम परमात्मा की ओर उन्मुख होते हैं तभी हमें उस पवित्र प्रेम का अनुभव होता है। जितना-जितना मनुष्य भगवान के करीब आता है उतना उसके अंदर भी नि:स्वार्थ प्यार उत्पन्न होता है। भगवान प्रेम के चुंबक हैं। उनके साथ प्यार करने से हम भी उनके समान बन जायेंगे। इतने जन्मों तक हम देहधारियों से प्रेम करते आए, यह एक अंतिम जन्म मिला है परमात्मा से प्यार करने और उनका प्रेम पाने के लिए इसलिए उनसे प्रेम कर हम भी सच्चे प्रेम के अधिकारी बनें। परमात्म प्रेम में वो जादू है जो हम देह की सुध-बुध तक भी भूल जाते हैं और मनुष्य से देवता बन जाते हैं। ईश्वरीय प्रेम कैसी भी विपरीत बुद्धि आत्मा को भी सहयोगी बना देता है, गिरे हुए को उड़ने के पंख देता है, मुश्किल से मुश्किल कार्य के लिए हिम्मत देता है, दुश्मन को भी मित्र बना देता है, पत्थर को पिघला कर मोम कर सकता है।

प्रेम देने से मिलता है

कई लोग प्रेम पाकर नहीं, प्रेम देकर खुशकिस्मती महसूस करते हैं। कई हैं जिन्हें कभी किसी का प्रेम नहीं मिला परन्तु वे अपने बच्चों को, साथियों को, यहाँ तक कि अपने बूढ़े मात-पिता को प्रेम देकर बेहद प्यार, बेहद खुशी का अनुभव करते हैं क्योंकि देना ही लेना है। प्रेम पाने में जो अनुभव है उससे अधिक सुखद अनुभव प्रेम देने में है। इसलिए ईश्वरीय महावाक्य हैं, **''सदा हर समय, हर आत्मा से, हर परिस्थिति में स्नेही मूर्त भव। कभी भी अपना स्नेही मूर्त, स्नेह की सीरत, स्नेही व्यवहार, स्नेह के सम्पर्क-सम्बन्ध को छोड़ना मत, भूलना मत। चाहे कोई व्यक्ति, चाहे प्रकृति, चाहे माया कैसा भी विकराल रूप, ज्वाला रूप धारण कर सामने आये लेकिन विकराल ज्वाला रूप को सदा स्नेह के शीतलता द्वारा परिवर्तन करते रहना। स्नेह लेना है, स्नेह देना है। सदा स्नेह की दृष्टि, स्नेह की वृत्ति, स्नेहमयी कृति द्वारा स्नेही सृष्टि बनानी है। कोई स्नेह नहीं भी दे लेकिन आप मास्टर स्नेह स्वरूप आत्मायें दाता बन रूहानी स्नेह देते चलो। आज की जीव आत्मायें स्नेह अर्थात् सच्चे प्यार की प्यासी हैं। स्नेह की एक घड़ी अर्थात् एक बूँद की प्यासी हैं। सच्चा स्नेह न होने के कारण परेशान हो भटक रहे हैं। सच्चे रूहानी स्नेह को ढूंढ रहे हैं। ऐसी प्यासी आत्माओं को सहारा देने वाले आप मास्टर ज्ञान सागर हो।''** ❖

जब मरते-मरते बाबा ने बचाया

सूबेदार आर.सी.चतुर्वेदी

मैं भारतीय सेना में सूबेदार (शिक्षा) रैंक में कार्यरत हूँ। अप्रैल, 2013 में मैं भोपाल से दो दिन के आकस्मिक अवकाश पर अपने घर ग्वालियर गया था। वापस ड्यूटी पर आने के लिए आंध्र प्रदेश एक्सप्रेस का इन्तज़ार कर रहा था।

गाड़ी आई और मैं मिलिट्री कोच में चढ़ने का प्रयास करने लगा मगर कोच में पहले बैठे फौजियों ने दरवाज़ा नहीं खोला। जब गाड़ी चलने लगी तो जल्दी से विकलांग कोच में चढ़ गया। तभी देखा कि मिलिट्री कोच का दरवाज़ा खोल दिया गया है। मैं मिलिट्री कोच में चढ़ने के लिए विकलांग कोच से उतर गया। इस चक्कर में गाड़ी के साथ ही घिसटने लगा। तभी गाड़ी की गति कुछ कम हुई। मुझे लगा, किसी ने सहारा देकर मुझे उठा दिया और जल्दी से मिलिट्री कोच में चढ़ा दिया। आस-पास देखा तो कोई व्यक्ति नहीं था। सचमुच बाबा ने मुसीबत के समय आकर मुझे बचा लिया। शुक्रिया शिवबाबा। ❖

पल भर के प्यार ने बदला जीवन

● ब्रह्माकुमार सुनील कुमार गुप्ता, कानपुर (सिविल लाइन)

मैं इन्कम टैक्स विभाग में वरिष्ठ कर सहायक के पद पर कार्यरत हूँ, 35 वर्ष का हूँ। परिवार में मेरी पत्नी तथा दो छोटे बच्चे हैं। शादी के कुछ ही दिनों के बाद मेरे और मेरी पत्नी के बीच बहुत लड़ाई-झगड़े होने शुरू हो गये और जीवन बहुत ही असंतुलित हो गया। पत्नी को अकेलापन लगने लगा तो उसने टीवी में ब्रह्माकुमारी बहन शिवानी का कार्यक्रम देखना शुरू कर दिया। मुझे यह सब कुछ पसंद नहीं था और इस कारण भी मेरी उनसे खूब लड़ाई होती रहती थी (उस समय मुझे कलयुगी दुनिया का वातावरण बहुत अच्छा लगता था)। लड़ाई में उस समय तो जीत मेरी ही हुई, मेरा भय इतना होने लगा कि जैसे ही मैं शाम को कार्यालय से घर आता, मेरा बड़ा बेटा कहता, मम्मी, पापा आ गए हैं, जल्दी से टीवी बंद कर दो। जब मैं सो जाता तो मेरी पत्नी रात 11 बजे वह छुटा हुआ कार्यक्रम फिर देखा करती थी। ऐसा करते उसे करीब 2 वर्ष हो चुके थे। मैं अपनी कलियुगी आदतों में इतना डूबा हुआ था कि मैंने इन्टरनेट लगवा लिया और उसी में खोया रहने लगा। फिल्मी गाने सुनना, डाउनलोड करना, फालतू चीज़ों को देखना मेरा संस्कार बनता जा रहा था। मैं ऑफिस जाने के एक घंटे पहले सुबह 9 बजे सो कर उठता था, बच्चे कब स्कूल चले जाते थे, पता ही नहीं चलता था।

पहले दिन ही बाबा ने अशरीरी बना दिया

मेरे एक पड़ोसी सुबह 7 बजे टहलने जाते हैं, मैंने उनसे मज़ाक में कहा, मुझे भी साथ ले लिया करो। उन्होंने सच में अगले दिन सुबह 7 बजे मेरे दरवाजे की घंटी बजा दी। पत्नी ने मुझे उठाया और मैं मुँह बनाके पड़ोसी के साथ टहलने चला गया। टहलना मुझे अच्छा लगा और मैं नियमित टहलने लगा। टहल कर आता, तो पत्नी कंप्यूटर पर इंटरनेट के माध्यम से बहन शिवानी का राजयोग के कोर्स का कार्यक्रम देख रही होती थी। मैं बेड पर लेट जाता और कंप्यूटर की आवाज न चाहते हुए भी मेरे कानों में जाती रहती, सुबह-सुबह मन शांत रहता था इसलिए मैं उनसे कुछ नहीं कहता था। ऐसा चलते करीब एक सप्ताह बीता, मुझे राजयोग की बातें अच्छी लगने लगी और मैं रुचि लेने लगा। मैंने पत्नी से पूछा, योग कैसे लगाया जाता है? उसने बताया कि संस्कार चैनल में सुबह 4 बजे योग लगाने की विधि दिखाई जाती है। अगले दिन मेरी नींद सुबह 4:15 बजे अपने आप खुल गई। मैंने टीवी खोला

और बैठ गया। पहले ही दिन बाबा ने मुझे अशरीरी बना दिया और पूरा दिन मेरा बहुत अच्छा गया। मैं बहुत खुश था, फिर तो मैं रोज सुबह 4 बजे उठने लगा और योग करने के बाद सुबह 5 बजे टहलने जाने लगा ।

आँखें भर आई

इसके बाद पत्नी के साथ राजयोग सीखने के लिए सेवाकेन्द्र पर जाना शुरू कर दिया। एक दिन क्लास के बाद मेरी मुलाकात सेंटर की निमित्त बहन से हुई। मैंने कहा, दीदी, मुझे ब्रह्मा बाबा का एक फोटो चाहिए। मैं जिस तरह की फोटो की मांग कर रहा था शायद उस तरह की फोटो उस समय स्टाक में नहीं थी। उन्होंने बहनों से, क्लास रूम में लगी फ्रेमिंग की हुई फोटो उतार कर मुझे देने को कहा। मैंने मना कर दिया कि यह फोटो रहने दीजिएगा लेकिन दीदी ने ब्रह्मा बाबा की वह फोटो उतार कर (माला सहित) दे दी। मेरी आँखें उस पल भर

के नि:स्वार्थ प्यार से भर गई। मैंने उस फोटो को घर पहुँचकर तुरंत दीवार पर लगा दिया। मैंने सेंटर पर सिर्फ राजयोग सीखने के लिये जाना प्रारंभ किया था। सात दिन का कोर्स पूरा होने के बाद शायद मैं सेंटर जाना बंद कर देता लेकिन जब मैं उस फोटो के सामने बैठकर योग लगाता तो मुझे उस पल भर के प्यार की याद आ जाती, इस कारण मैंने पत्नी के साथ सेंटर जाना जारी रखा और मुरली सुनने लगा। मुझे तो यह भी नहीं पता था कि इस सेंटर के माध्यम से मुझे भगवान मिल जायेंगे, मेरा तो जीवन ही अमूल्य बन गया।

बाबा है तो जीवन है

मुझे पढ़ाने वाला टीचर स्वयं भगवान है। विषय सिर्फ चार हैं – ज्ञान, योग, धारणा व सेवा। पढ़ाई का परिणाम अनुभव है और यह मेरा अनुभव है कि मेरे 84 जन्मों में मेरा यह राजयोगी जीवन सबसे श्रेष्ठ है क्योंकि मुझे प्यार करने वाला, प्यारी-प्यारी बातें करने वाला, तबीयत ठीक ना होने के समय अपनी गोद में सुलाने वाला, दुख के समय रास्ता निकालकर सुख देने वाला, अपने हाथों से भोजन खिलाने वाला, प्यारा-प्यारा राजदुलारा, मेरी आँखों का नूर, मेरा बाबा, मेरा साजन, मेरा बच्चा, मेरा भैया, मेरा दोस्त प्यारा शिव बाबा मेरे साथ है। खुशी और प्यार होता क्या है, यह कई भाइयों व बहनों को पता नहीं है। मेरा आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि अपने परमपिता परमात्मा को पहचानो, वो बांहें पसारे सभी को बुला रहे हैं कि बच्चे, अब दु:खी क्यों होते हो, 'मैं हूँ ना।' आप एक कदम सेंटर की तरफ बढ़ाओ, तो हो सकता है कि आपका जीवन श्रेष्ठ बन जाए। मेरा तो दृढ़ अनुभव है कि 'बाबा' है तो जीवन है, अगर 'बाबा' नहीं तो यह जीवन भी नहीं। मैं अपनी पत्नी से उस समय की गलती के लिये माफी माँगता हूँ। मुझे माफ कर देना संजू। ❖

बेहद की वैराग वृत्ति

ब्रह्माकुमार रामकुमार, रिवाड़ी

मृत्युकाल की सब सामग्री तैयार है। कफन भी तैयार है, नया नहीं बनाना पड़ेगा। उठाने वाले आदमी भी तैयार हैं, नये नहीं जन्मेंगे। जलाने की जगह भी तैयार है, नयी नहीं लेनी पड़ेगी। जलाने की लकड़ियाँ भी तैयार हैं, नये वृक्ष नहीं लगाने पड़ेंगे। केवल श्वास बंद होने की देर है। श्वास बंद होते ही यह सामग्री एकत्रित हो जायेगी। जैसे सामग्री तैयार है, क्या हमारी भी इतनी तैयारी है? यह संसार सदा रहने के लिए नहीं है। यहाँ केवल आकर जाने वाले ही रहते हैं। मकान यहाँ बना रहे हैं, सजावट यहाँ कर रहे हैं, संग्रह यहाँ कर रहे हैं, पर खुद अगली यात्रा की ओर बढ़ रहे हैं। जहाँ जाना है, वहाँ के लिए कुछ कमाया है क्या?

निश्चित समय पर चलने वाली गाड़ी के लिए भी पहले से सावधानी रहती है, फिर जिस मौत रूपी गाड़ी का कोई पता और समय निश्चित नहीं उसके लिये तो हरदम सावधानी रहनी चाहिये। दुनिया में और कुछ निश्चित हो या ना हो परन्तु आदमी एक दिन इस जहान से चला जाएगा, यह निश्चित है। आने वाला अवश्य जाने वाला होता है, यह नियम है। हर जन्मदिन हमें याद दिलाता है कि मृत्यु एक वर्ष और करीब आ गई है। कोई भी बड़ा होकर पढ़ेगा या नहीं, शादी करेगा या नहीं, धन कमाएगा या नहीं, इन सब बातों में सन्देह है, पर वह मरेगा कि नहीं, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

जब भी मन में खराब चिन्तन आए तो सावधान हो जायें कि यदि इस समय मृत्यु हो जाये तो क्या गति होगी? अगर हर समय शिवबाबा की स्मृति रहे तो मृत्यु कभी भी आ जाये, कोई चिन्ता नहीं। ❖

पहला सुख निरोगी काया

● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

किसी व्यक्ति के पास बहुत धन हो तो वह उसे अलग-अलग स्थानों पर सुरक्षित रखने की कोशिश करता है जैसे कुछ ज़मीन के रूप में, कुछ बैंक में, कुछ जेवर के रूप में, कुछ कैश के रूप में, कुछ दी गई उधार के रूप में, कुछ मकानों के रूप में। मान लीजिए, कोई अप्रत्याशित विपत्ति आ जाए और व्यक्ति को भागना पड़े तो वो इनमें से कौन-सी सम्पत्ति को तुरन्त हाथों में ले सकता है? सिवाय कैश के कोई भी उस समय साथ नहीं चल सकती। परन्तु अधिक मात्रा में कैश भी जीवन के लिए खतरा साबित हो सकता है। उसकी छीना-झपटी हो सकती है या उसके लालच में हत्या भी हो सकती है। इसकी भेंट में स्वास्थ्य ऐसा धन है जो हर पल मानव के पास है और जहाँ भी जाएगा, साथ जाएगा। इसे चोर भी लूट नहीं सकते। इसलिए भारतीय धार्मिक साहित्य में यह कहा गया कि

पहला सुख निरोगी काया,
दूजा सुख हो धन-माया।

स्वास्थ्य साथ होने पर किसी सेवादार की भी ज़रूरत नहीं पड़ती। व्यक्ति अकेला रहकर भी स्वास्थ्य के बल से धन प्राप्त कर सकता है। इसलिए सबसे बड़ा धन है स्वास्थ्य रूपी धन।

वजन रह सकता है सन्तुलित

स्वास्थ्य का सबसे बड़ा दुश्मन है रोग। कई रोग मानव की लाख सावधानियों के बाद भी आक्रमण कर लेते हैं परन्तु एक आधुनिक रोग, जो कई रोगों को आने का मार्ग देता है, हमारे वश में भी है, वो है अधिक शारीरिक वजन। वजन बढ़ता है मुख के रास्ते और कम होता है टांगों के रास्ते। यदि मुख को थोड़ा बन्द रखें यानि कम खाएं और टांगों से हलचल करें (चलना-फिरना, व्यायाम) तो वजन सन्तुलित हो सकता है। मुख का बन्द रहना दो तरह से लाभदायक है। एक तो बन्द रहने से कम खाएंगे, शरीर हलका रहेगा। दूसरा, मुंह बन्द रहने से कम बोलेंगे, शक्ति का क्षरण कम होगा, इससे मन हलका रहेगा। कई लोग कहते हैं कि शरीर का वजन ना चाहते भी बढ़ता जाता है। आधुनिक जीवन शैली इसके लिए काफी हद तक ज़िम्मेवार है। इस शैली को अपनाने से यदि शरीर का वजन बढ़ सकता है तो जीवन शैली में थोड़ा परिवर्तन करने से वजन घट भी सकता है। दूसरे शब्दों में हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि व्यक्ति अपने शरीर का वजन बढ़ा भी सकता है और घटा भी सकता है। वह प्रकृति के बने शरीर का मालिक है। जैसे मनुष्य के वश में है कि वह पलकों को खोले चाहे बन्द करे, शरीर को लिटाए या उठाए, इसी प्रकार शरीर को हलका बनाए या भारी, यह भी उसके वश में है। कुछ अपरिहार्य कारणों या बीमारियों को छोड़कर 95 प्रतिशत मामलों में हम अपने शरीर के वजन को घटा या बढ़ा सकते हैं।

वजनी शरीर का प्रभाव अल्पकालिक

कई लोगों की यह धारणा होती है कि वजनी शरीर से व्यक्तित्व प्रभावशाली बनता है। आस-पास और साथियों पर अच्छा प्रभाव डाला जा सकता है। यह धारणा उतनी ही गलत है जितनी यह धारणा कि प्रसाधनों से व्यक्तित्व सुन्दर बनता है। सौन्दर्य प्रसाधन सतही, अल्पकाल की सुन्दरता अवश्य देते हैं परन्तु सदाकाल की और दिल में उतरने वाली सुन्दरता नहीं। ऐसी सुन्दरता तो चरित्र उज्ज्वल होने पर, गुणवान होने पर ही बनती है। इसी प्रकार वजनी शरीर अल्पकाल के लिए प्रभाव डाल सकता है परन्तु सदाकाल का प्रभाव तो एक स्वस्थ, सन्तुलित, चुस्त-दुरुस्त शरीर जिसमें मिलनसार और अपनेपन से भरा मन हो, वही डाल सकता है।

दवा को व्यसन न बनने दें

कहा जाता है, इलाज से परहेज अच्छा परन्तु परहेज करने के लिए मनोबल और मन पर संयम चाहिए। इसके अभाव में हम परहेज तोड़ते रहते हैं और मन में सोचते हैं, कोई बात नहीं, दवाई तो है ना, एक डोज दवाई का ज्यादा ले लेंगे। फिर यह भी कहते हैं, ज़िन्दगी कुछ दिन की है, जो जी में आए कर लो, ज़िन्दगी का भरपूर मज़ा लो। पर हम विचार करें, हमने जिन्दगी के कई पहलू तो अनचखे छोड़ दिए। जितना मज़ा मनमानी करने से मिलता है उससे कई गुणा मज़ा तो मन पर संयम रखने से मिलता है। हमने उस मज़े को तो बिना चखे ही छोड़ दिया तो जिन्दगी को भरपूर कहाँ जिया, आधा-अधूरा ही जिया। इस गरीब देश में जहाँ करोड़ों भूखे लोग करुण निगाहों से दया की भीख मांगते हैं वहाँ हम बिना ज़रूरत खाएं और उसके दण्डस्वरूप महंगी दवाई का खर्च झेलें इससे कई गुणा आनन्द इसमें है कि हम संयम के द्वारा अधिक खाद्य, प्रतिकूल खाद्य और दवाई दोनों की बचत करें। कई बार अधिक खाने से रोग तो नहीं लगता पर भारीपन और गैस आदि की समस्याएं हो जाती हैं। हम इसे महसूस करते हैं और मन ही मन संकल्प करते हैं कि अबकी बार अमुक चीज़ नहीं खाएंगे पर जैसे ही चीज़ सामने आती है, संकल्प एक कमज़ोर पहरेदार की तरह से सामने से हट जाता है और चीज़ अन्दर चली जाती है। जब बार-बार संकल्प कुछ और तथा कर्म कुछ और होता है तो आत्मविश्वास कमज़ोर पड़ने लगता है और हम छोटी-सी जिह्वा के सामने हार मानकर जिन्दगी के असली आनन्द से वंचित रह जाते हैं। अत: हमें ध्यान रहे कि दवाई पर अत्यधिक निर्भरता या जिह्वा की अत्यधिक मनमानी भी एक गुप्त व्यसन ही की तरह है। हमें इस व्यसन से शीघ्र पीछा छुड़ा लेना चाहिए।

छाती की महिमा, न कि पेट की

मानव की ऊँची और चौड़ी छाती को लेकर अनेक मुहावरे बने हैं जैसे छाती चौड़ी होना अर्थात् गौरव अनुभव करना, सीना तानना अर्थात् साहस दिखाना, छाती पर चढ़ना अर्थात् नज़दीक आकर आक्रमण करना, छाती ठोंकना अर्थात् आत्मविश्वास व्यक्त करना, छाती से लगाना अर्थात् स्नेह व्यक्त करना आदि-आदि। इन सब मुहावरों में छाती के साथ मनुष्य के मन के ऊँचे भावों को जोड़ा गया है। ऐसे मुहावरे पेट को लेकर नहीं बने हैं। जिसका पेट बड़ा हो, भारी हो, उसे अधिक से अधिक पेटू तो कह दिया जाता है पर कोई ऊँचा भाव उसके प्रति प्रदर्शित नहीं होता। इसलिए व्यक्ति महान वही है जिसका पेट अन्दर और छाती बाहर हो। यदि यह उलट जाता है तो जीने के अर्थ भी उलट जाते हैं।

अतिरिक्त भार उठाने की मेहनत से बचें

चलते-चलते हांफना, अपना ज़रूरी सामान न उठा सकना, कुछ सीढ़ियाँ चढ़ने में सांस फूलना – अधिक वज़न के ये लक्षण भी किसी रोग से कम नहीं हैं। ऐसे लोग दूसरे का पाव भर सामान उठाने में भारीपन महसूस करते हैं पर अपने शरीर का 5 या 10 या 20 कि.ग्रा. वजन तो ना चाहते भी 24 घंटे ढोते ही हैं। इस अतिरिक्त भार को उठाने की मेहनत भी तो अनावश्यक मेहनत ही है। थोड़े प्रयास से, संयम से इससे बचा जा सकता है। एक रिपोर्ट के अनुसार सन् 1980 के बाद सन् 2013 तक संसार भर में मोटापा दुगना हो चुका है। सन् 2008 में 20 वर्ष या इससे अधिक आयु के 1.4 बिलियन वयस्क अधिक वजन वाले थे। सन् 2011 में पांच वर्ष से कम आयु के 40 लाख बच्चे अधिक वजन वाले थे। शरीर में असामान्य या अत्यधिक वसा जमा होना ही मोटापा है। अधिक मोटापे से स्वास्थ्य खराब हो सकता है। मृत्यु के वैश्विक कारणों में मोटापा पांचवाँ बड़ा कारण है। लगभग 2.8 लाख वयस्क हर वर्ष अधिक वजन या मोटापे के कारण देह त्याग करते हैं।

(शेष...पृष्ठ 15 पर)

बाबा ने आबाद कर दिया

● ब्रह्माकुमार शिवेश्वर, गोरखपुर

मेरे जीवन में एक भारी परीक्षा की घड़ी तब आयी जब मेरी धर्मपत्नी का सन् 1990 में देहांत हो गया। वे दो लड़कियाँ और दो लड़के पीछे छोड़ गयी। सबसे छोटा लड़का एक साल का था। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि कहाँ जाऊँ, क्या करूँ, कैसे इनकी पालना करूँ। मैं पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर में कैशियर के पद पर सर्विस कर रहा था। मेरे माता-पिता दूसरी शादी के लिए दबाव डालने लगे परन्तु इन चार बच्चों को देखकर संकल्प चला कि एक सुख के लिए चार को कैसे दु:खी करूँ इसलिए परिवार वालों से कहा कि दूसरी शादी नहीं करूँगा।

अशान्ति की चरम सीमा

तनाव ज्यादा पैदा होने के कारण कैश काउंटिंग के बजाए मुझे बैंक में ड्यूटी दी गयी जहाँ प्रतिदिन की आय को बैंक में जमा करना होता था। एक दिन एक व्यक्ति 90 नोट 100-100 के (9000) लाया और बोला, मुझे 500 के नोट चाहिएँ। मैंने बाक्स खोलकर 90 नोट 500-500 के दे दिये। वह व्यक्ति दूर चला गया। एकाएक ख्याल आया कि 100 के 90 नोट यानि 9 हजार और 500 के 90 नोट यानी 45 हजार। मैं बाहर भागा, वह व्यक्ति कोने में खड़ा होकर गिनती कर रहा था। मेरी इतनी बड़ी गलती से आप समझ सकते हैं कि मैं कितना अशांत था। इसी बीच ब्रह्माकुमारी से जुड़े हुए एक रेलवे कर्मचारी से मैंने कहा, मुझे शांति चाहिए। उन्होंने कहा , ठीक है, आज शाम को ब्रह्माकुमारी आश्रम में आ जाना। वहाँ पहुँचने पर श्वेतवस्त्रधारी बहनें मिलीं, उन्हें देखता ही रह गया। बहनजी ने प्यार से बिठाकर मेरी व्यथा सुनी। फिर प्यार से मुझे कोर्स कराना शुरू कर दिया। कोर्स करते-करते मेरी समझ में आया कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, कहाँ का रहने वाला हूँ, इस संसार में क्यों आया हूँ और मेरे अविनाशी पिता कौन हैं? मैं रो रहा हूँ, किसके लिए? मात्र मिट्टी के एक पुतले के लिए। इसके बाद बाबा की याद में मगन हो गया और रात भर छत पर योग करने लगा। उस दिन से रोज़ मुरली क्लास करना भी प्रारम्भ हो गया।

बाबा के बल से निभाई व्यस्त दिनचर्या

बाबा ने इतना बल भरा कि योग करके, फिर खाना बनाकर, बाहर से दरवाजे पर ताला लगाकर सुबह ही साढ़े तीन बजे मुरली सुनने आश्रम पर चला जाता था। उस समय सब बच्चे सोये रहते थे। सेंटर से मुरली क्लास

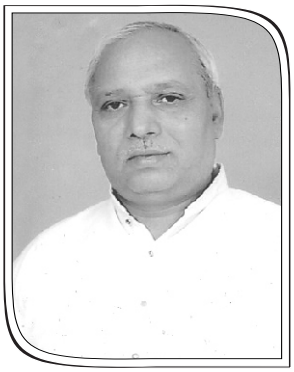

करके वापस आकर बच्चों को जगाकर, नहलाकर, नाश्ता कराकर स्कूल भेज देता था। मेरी बड़ी बेटी की पढ़ाई सुबह के समय होने के कारण वह जल्दी क्वार्टर वापस आ जाती थी। तब मैं साल भर के बच्चे को बेटी के सहारे छोड़कर ऑफिस चला जाता था। आठ घंटा ड्यूटी करने के बाद शाम 5 बजे आकर भोजन बनाता, बच्चों को खिलाता फिर आश्रम पर योग करने जाता। आश्रम से शाम साढ़े सात बजे योग करके वापस क्वार्टर आता, रात का भोजन बनाता, बच्चों को पढ़ाता, सोते समय सभी की तेल से मालिश करता और सुलाता, इस प्रकार से सारी दिनचर्या चलती रही।

हिम्मत हमारी, मदद शिवबाबा की

आस-पड़ोस के लोगों के संकल्प चलते कि शिवेश्वर भाई ब्रह्माकुमारीज़ के चक्कर में बर्बाद हो

जाएंगे और बच्चे अनाथ हो जायेंगे परन्तु बाबा ने मुझे बहुत शक्ति दी। कुछ समय बाद बड़ी बेटी की शादी कर दी। बड़े बेटे को सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनाकर सर्विस लगवाई। जीवन-यात्रा हँसी, खुशी से चलने लगी थी पर तभी दूसरी परीक्षा आ गयी। जो छोटा बेटा साल भर का था उसे 18 साल की उम्र में एकाएक फरका की बीमारी हुई। इलाज के समय डाक्टर ने दवा का ऐसा हाई डोज़ दिया कि उसका ब्रेन हेमरेज हो गया। वह चल बसा। फिर भी मैं हिम्मत नहीं हारा। बाबा की सेवा करता रहा। सन् 2011 में फिर परीक्षा आई। छोटी लड़की 17 वर्षों से सेंटर पर रहकर बाबा की सेवा कर रही थी। उसकी दोनों किडनी फेल हो गई थीं। त्रिवेंद्रम से लेकर दिल्ली तक इलाज कराने के बाद दस सितम्बर, 2011 को उसे इलाज के लिए हिमाचल प्रदेश ले जा रहा था कि रास्ते में बाबा की गोद में चली गयी। फिर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी और शिवबाबा की मदद मिलती रही। मैं जानता हूँ कि इस संसार में जो कोई भी आया है उसे जाना तो है ही। इस नाटकशाला में हम सब आत्मायें पार्टधारी हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि परमात्मा शिवबाबा इस धरा पर आ चुके हैं और नई दुनिया की स्थापना का कार्य करा रहे हैं। बाबा का हाथ और साथ लेकर चलते हुए आज 22 वर्ष हो रहे हैं। मैं अपने आपको परम सौभाग्यशाली समझता हूँ।

जेल में जीवन-परिवर्तन

जिला कारागार, गोरखपुर में सन् 2004 से राजयोग प्रशिक्षण केन्द्र चल रहा है। प्रत्येक गुरुवार को वहाँ बाबा को भोग भी लगता है। गोरखपुर जेल को अति सेंसिटिव जेलों में से एक माना जाता है। सन् 2004 में वरिष्ठ जेल अधीक्षक बी.के. जैन ने मुझे 6 महीने का समय दिया और कहा कि इन कैदियों के जीवन में परिवर्तन करके दिखाइये। उस समय सिर्फ तीन कैदी भाइयों से सेवा शुरू की थी। तीन महीने के अंदर 25 कैदी भाई साप्ताहिक कोर्स कर नित्य मुरली क्लास में आने लगे। जहाँ हाहाकार था वहाँ जयजयकार और ओमशांति की धुन गूँजने लगी। अब 60 कैदी भाई नियमित आध्यात्मिक क्लास करते हैं, उनमें से 50 भाई ज्ञानामृत पत्रिका के सदस्य भी बने हैं। हर तीन महीने में एक लिखित परीक्षा लेकर उसे उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ में भी भेजा जाता है। पिछले 8 वर्षों में लगभग 600 कैदी भाइयों के जीवन में परिवर्तन आया है और कई कैदी भाइयों के अनुभव भी ज्ञानामृत में प्रकाशित हुए हैं। इन सबके जीवन को देखते हुए उत्तर प्रदेश शासन ने एक आदेश-पत्र द्वारा पूरे उत्तर प्रदेश की कारागारों में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सौजन्य से राजयोग केन्द्र चलाने का आग्रह किया है। वरिष्ठ जेल अधीक्षक एस.के. शर्मा तथा जेलर नौमीलाल ने मुझ निमित्त आत्मा को इसके लिए सम्मानित भी किया। वरिष्ठ जेल अधीक्षक महोदय ने कहा कि जेल प्रशासन में सर्विस करते हमने जेल में ऐसा परिवर्तन कभी नहीं देखा, जो यहाँ देखने को मिला है। ❖

तारा है तू गगन का

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

अंकुरण है तू बीज का
ज्ञान हुआ कल्प की हर चीज़ का
कोंपल है तू नये झाड़ की
शक्ति मिली धूप और छांव की
चमकता तारा है तू गगन का
हौसला है तू अमन का
छोटी-सी लहर से डरना नहीं
किश्ती से उतरना नहीं
हिम्मत बटोर और चढ़ना है आगे
तब नव-शक्ति मन में जागे
आयेंगे तूफान और उफान भी
यहाँ अपने भी, अनजान भी
माया से लड़ना तुम्हारा कर्म है
मेहनत के अलावा सब भ्रम है
आस कर मत किसी सहारे की
छत्रछाया है जब प्राण प्यारे की
सामना कर, हर मुश्किल से लड़
बुद्धि रूपी अंगुली ले पकड़
ज्ञानामृत का बहता रूहानी पानी
है आत्माओं के साहस की कहानी।

शक्ति निकेतन के फरिश्ते

● राजनारायण, बनारस (उ.प्र.)

मैं अप्रैल, 2013 में परमात्म मिलन हेतु माउन्ट आबू गया था। वहाँ मैंने प्यारे-प्यारे शिव बाबा से मिलन मनाया। अगले दिन घोषणा हुई कि शक्ति निकेतन, इन्दौर होस्टल की कन्याओं की शानदार प्रस्तुति होगी। निश्चित समय पर डायमण्ड हॉल में उपस्थित हुआ। अन्य प्रस्तुतियों के साथ-साथ मल्लखम्भ पर 6-7 कन्याएँ अपना करतब दिखा रही थीं। इन कन्याओं की एकाग्रता, बैलेंस, अदम्य साहस और उत्साह-उमंग देखते बनता था। मेरे आश्चर्य का ठिकाना तब और नहीं रहा जब ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी ने मुक्त कंठ से इनकी प्रशंसा की और विशेष टोली और भेंट आदि प्रदान की। उस वक्त मेरे मन में यही विचार चल रहा था कि ऐसे करतब, जिन्हें या तो लड़कों को करते देखा था या सर्कस में, करने वाली इन कन्याओं की परवरिश किनके द्वारा की जाती है। अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए मैंने इन्दौर जाने का मन बना लिया।

आखिर वह समय आ गया। मैं इन्दौर के पॉश एरिया न्यू पलासिया में पहुँचा जहाँ ब्रह्माकुमारीज़ के इन्दौर जोन का कार्यालय ओमशांति भवन स्थित है। इसी प्रांगण में इन कन्याओं का शक्ति निकेतन होस्टल है। वहाँ पर मुझे एक बहन होस्टल दिखाने लगी जिसमें बैठक हाल, डायनिंग हॉल, किचन, कम्प्यूटर रूम, ऑफिस, अनाज भंडार, मेडिटेशन हॉल, लायब्रेरी, कन्याओं के रूम जिनमें डबल स्टोरी पलंग, बड़ी-सी एक छत जिस पर कन्याएँ गेम्स आदि खेलती हैं, टॉप पर सोलर प्लांट जिसके द्वारा गरम पानी आदि मिलता है.... अद्भुत व्यवस्था है इस होस्टल की। होस्टल का अनुशासन तथा पवित्रता से भरपूर वातावरण देखकर मैं असीम शांति का अनुभव कर रहा था। किन शब्दों से प्रशंसा करूँ, समझ नहीं आ रहा था। इसके बाद मेरी जिज्ञासा कन्याओं से मिलने की थी। बहन मेरे मन की बात को समझ गई। उन्होंने कहा, अब मैं आपको होस्टल की कन्याओं से मिलवाती हूँ।

होस्टल में लगभग 150 कन्याएँ हैं, जो स्कूल-कॉलेज की शिक्षा के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान भी प्राप्त करती हैं। सम्पूर्ण भारतवर्ष से कन्याएँ इस होस्टल में योग्यता अनुसार एवं नियमानुसार प्रवेश पाती हैं। तेजस्वी कन्याओं से मुलाकात के दौरान मैंने पाया कि इनकी सादगी, सरलता, विनम्रता, स्नेह एवं मधुर वाणी सहज

शक्ति निकेतन की कुमारियाँ मल्लखम्भ करते हुए

ही आकर्षित करती है। इन्हें देखकर परमात्म स्मृति होने लगती है। कन्याओं से मैंने पूछा –

प्रश्नः- आपको यहाँ रहते हुए कैसा लगता है?

कन्याः- बहुत अच्छा लगता है।

प्रश्नः- आपको घर, माता-पिता एवं भाई-बहनों की याद नहीं आती है?

कन्याः- घर की याद मोह से वशीभूत हो आती है, जो बहुत दुख देती है। अब ऐसी दुख देने वाली याद समाप्त हो गई। यहाँ आकर हमें अद्भुत ज्ञान मिला कि हमारा असली पिता तो परमपिता परमात्मा शिव है और असली घर परमधाम है। हम सभी आत्माएँ हैं और इस आत्मिक भाव से

हमारे लौकिक संबंध बेहद सुखदायी बन गये हैं।

प्रश्नः- आप भारत के कोने-कोने से आते हैं, आप सबकी भाषा, संस्कृति और खान-पान अलग-अलग हैं फिर आप आपस में कैसे एडजेस्ट करते हैं?

कन्याः- जब हम सब एक ही ईश्वर की संतान हैं, आपस में भाई-भाई हैं तो एडजस्ट करना सरल लगता है।

प्रश्नः- इतनी छोटी उम्र में इतनी बड़ी-बड़ी बातें आप कैसे सीख जाती हैं?

कन्याः- होस्टल में हम केवल लौकिक पढ़ाई ही नहीं करते हैं किन्तु प्रतिदिन ईश्वरीय पढ़ाई एवं योगाभ्यास भी करते हैं।

प्रश्नः- यहाँ आपकी दिनचर्या क्या रहती है?

कन्याः- यहाँ छठी क्लास से लेकर कॉलेज तक की छात्राएँ रहती हैं। सुबह 4.00 बजे से 6.30 बजे तक नित्य कर्म, स्नान, मेडिटेशन, मुरली क्लास, नाश्ता आदि से निवृत्त हो स्कूल-कॉलेज के लिए जाते हैं। दोपहर का भोजन 10.30 से 1.30 बजे तक एवं रात्रि भोजन 7.30 से 9.00 बजे के मध्य होता है। होस्टल के नियम के अनुसार हम सभी कन्याएँ अन्नशुद्धि का व्रत लेती हैं। परमात्म स्मृति में बनाया हुआ भोजन ही स्वीकार करती हैं। यहाँ आवश्यकता की सभी वस्तुएँ हमें उपलब्ध कराई जाती हैं। होस्टल में 32 विभिन्न विभाग हैं, इन सभी के कार्यों में प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से सभी कन्याओं की भोजन बनाने, परोसने, कपड़े धोने आदि सभी प्रकार की ड्यूटी बारी-बारी लगाई जाती है। इसके अलावा कम्प्यूटर, पेंटिंग, नृत्य, गायन, वादन, कलाकृति, सिलाई-कढ़ाई एवं साफ-सफाई आदि भी हम लोग दीदियों से सीखते हैं।

ये बातें करते हुए मेरी नज़र प्रत्येक बच्ची पर थी, जो समूह के रूप में मेरे आसपास खड़ी थीं और सभी के चेहरे प्रफुल्लित थे। मुझे यह भी बताया गया कि एक सीनियर एवं एक जूनियर कन्या साथ-साथ रहती हैं जिससे सहज ही अनुभव एवं संस्कार ट्रांसफर हो जाते हैं। मुझे लग रहा था, अनुशासन के साथ-साथ नैतिकता का जो पाठ इन्हें पढ़ाया जा रहा है इससे ये फ़रिश्ते विश्व शांति और विश्व प्रेम का कार्य कर रहे हैं और निश्चित रूप से आगे चलकर ये नई दुनिया की स्थापना में अहम भूमिका अदा करेंगे।

यह होस्टल बहनों द्वारा ही संचालित है। सम्पूर्ण देखरेख बहनों द्वारा ही की जाती है। आज के इस युग में दो बच्चों की परवरिश करना दूभर है, यहाँ 150 बच्चियों की परवरिश नैतिकता एवं चरित्र के पाठ सिखाते हुए की जाती है। आज के युवक-युवतियों के लिए यह एक ऐसी पहेली है जिसकी शायद वे कल्पना भी नहीं कर सकते। आज के नौनिहाल मोबाइल, कम्प्यूटर, यू ट्यूब, ईमेल जैसी चकाचौंध भरी दुनिया में डूबे हैं और जिंदगी का सदुपयोग नहीं कर पा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर ये नन्हें फ़रिश्ते नई दुनिया की स्थापना में संलग्न आसमान में सुराग करने का कार्य कर रहे हैं।

धन्य हैं वे माता-पिता जिनकी संतान यहाँ परवरिश पा रही हैं और धन्य हैं ब्रह्माकुमारी बहनें जो गुप्त रीति से परमात्मा के कार्य में संलग्न हैं। इन्हें कोटि-कोटि नमन्।

छात्रावास में नई कन्याओं के प्रवेश हेतु जनवरी माह से अप्रैल माह तक सम्पर्क कर सकते हैं। प्रवेश की प्रक्रिया मई-जून माह से प्रारंभ हो जाती है। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें –

बी.के.करुणा
शक्ति निकेतन
ओमशांति भवन,
ज्ञान शिखर गेट नं.-2
33/4 न्यू पलासिया,
इन्दौर (म.प्र.) 452001
फोन नं. 0731-2531631
मो.09425316843,
08989600088
ईमेल :-
shaktiniketan@gmail.com

शिवबाबा से बात

● अंजू, निलोखेड़ी (हरियाणा)

हम दिन में कई बार फोन लगाते हैं, कभी दोस्तों को, रिश्तेदारों को, कभी नौकरी-धंधे के साथियों को, कभी दुकानदारों या व्यापारियों को। कभी 'एंगेज' आता है, कभी 'कवरेज क्षेत्र से बाहर' आता है, कभी 'स्विच ऑफ' आता है, कभी 'कोई जवाब नहीं दे रहा है' आता है, फिर भी हम बार-बार कोशिश करके बात कर ही लेते हैं। कभी 'बैलेंस' खत्म हो जाता है तो तुरंत रिचार्ज करवाते हैं, कोई अच्छी स्कीम या कोई ऑफर ढूंढते हैं कि 'फुल टाकटाइम' मिल जाए। एस.एम.एस. पैक डलवाते हैं कि फ्री एस.एम.एस. हो जाए। फिर दिन में ढेर सारे एस.एम.एस. भेजते रहते हैं।

विपदा है भजन न होना

पर क्या कभी हमने परमपिता शिवबाबा को कॉल की है? क्या कभी मिस्ड कॉल ही सही, शिवबाबा को की है? हम गुडमॉर्निंग, गुडनाइट, हैप्पी बर्थडे जैसे ढेरों एस.एम.एस. सुबह से रात तक अपने साथियों को करते रहते हैं। कभी दिन में एकाध एस.एम.एस.शिवबाबा को भी करते हैं या नहीं? मानस में लिखा है,

कह हनुमंत विपद प्रभु सोई।
जब तक भजन सुमिरन नहीं होई।।

भावार्थ यह है कि हनुमान जी कहते हैं, विपदा वही है, जब भगवान का भजन सुमिरन नहीं होता। पालनहार शिवबाबा की याद नहीं आती। सब छूट जाएँ फिर भी जो साथ नहीं छोड़ता, जो परम हितैषी है, जो कभी धोखा नहीं देता, पग-पग पर संभालता है, संवारता है फिर भी अपने किए का श्रेय नहीं लेता, सदा पर्दे के पीछे रहता है, उस परम स्नेही की याद अगर नहीं आती, उसके लिए अगर समय नहीं है तो ऐसे उलझे हुए को शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक या आर्थिक कोई न कोई दुख देकर, शिवबाबा की ओर लगाने का प्रकृति का अकाट्य नियम है।

एक से दिल बांधने वाले निश्चिंत

दुख-मुसीबत पड़ने पर शिवबाबा की शरण में जाना अच्छा है पर उससे भी अच्छा है, क्यों न पहले से ही उनके प्रेमी बन जाएँ? कबीर जी कहते हैं,

कबीरा इह जग आए के
बहुत से किन्हें मीत।
जिन दिल बांधा एक से
वे सोयें निश्चिंत।।

तो चलिए, दृढ़ संकल्प करते हैं कि उस एक से ही दिल बांधेंगे। बहुतों से बात करते हैं, अब हर रोज़ समय निकालकर उनसे भी बातें करेंगे। पर क्या हमारे पास उनका पता या फोन नम्बर है? नहीं तो बातें करेंगे कैसे? शिवबाबा का पता और फोन नम्बर मिलेगा उनसे जो रोज़ बाबा से मिलते हैं, बात करते हैं और वे हैं ब्रह्माकुमारी बहनें तथा भाई। वे ही उनका मोबाइल नम्बर भी देंगे, बात करने का तरीका भी समझा देंगे और मिलने की युक्ति भी सिखा देंगे। वैसे तो शिवबाबा हैं अदृश्य पर वे उन्हें देखने का, यहां तक कि उन्हें बांधे रखने का उपाय भी बता देंगे। ज़रा श्रद्धा से उनके आश्रम में जाओ तो सही, ज़रा बैठो, समझो, शिवबाबा का नाम-धाम, स्वभाव, स्वरूप सब बता देंगे। पूर्व में कइयों को बताया है और उसके अनुसार वे शिवबाबा से मिले भी, बातें भी कर ली। हमें भी अवश्य बतायेंगे। तो फिर देर किस बात की? आइये चलें ब्रह्माकुमारी आश्रम में। याद रखें –

शिवबाबा का नम्बर किसी के साथ 'एंगेज' नहीं आता चाहे एक साथ लाखों लोग बातें करें। कभी 'स्विच ऑफ ' नहीं आता चाहे कभी भी बातें करें। कभी 'कवरेज क्षेत्र के बाहर' नहीं आता चाहे कहीं से भी बातें करें।

कभी भी बैटरी डिस्चार्ज नहीं होती बल्कि जितनी ज्यादा बातें करेंगे उतनी ही ज्यादा चार्ज होगी। शिवबाबा से बातें करने के लिए सब जगह 'रोमिंग' फ्री होता है। और हाँ उनसे बातें करने के लिए वर्तमान संगमयुग में 'स्पेशल ऑफर' है। कितनी ही बातें करो 'टॉकटाइम फुल'। ❖

मिल गई मंज़िल मुझे

● ब्रह्माकुमारी सुष्मिता, ढाका, बांग्लादेश

जीवन के इस सफर में हर मानव-मन में कुछ करने की, कुछ पाने की इच्छा जागृत होती रहती है। यूँ भी कह सकते हैं कि सबके मन में बड़े प्यार से एक सपना संजोया हुआ होता है। परन्तु, ज़रूरी नहीं कि सबके सपने सच हो जायें। कुछ लोगों के सपने सहज ही साकार हो जाते हैं, कुछ लोग सपनों को साकार करने में काफी मेहनत करते हैं और कुछ लोगों की तो तमाम उम्र ही बीत जाती है सपनों को साकार करने में। कइयों के सपने तो सपने ही बनकर रह जाते हैं। वे लोग खुशनसीब होते हैं जिनके सपने पूर्ण रूप से एवं मनचाहे रूप से साकार होते हैं।

अनजानी कशिश प्रभु के प्रति

मैं अपने को संसार की उन खुशनसीब आत्माओं में से एक समझती हूँ जिनके सपने साकार हो गये। बचपन में एक बार मीरा की कहानी सुनी थी, तब से ही मन में मानो मीरा की छवि छप गई थी। एक अनजानी कशिश, एक अनदेखा खिंचाव हमेशा ही प्रभु के प्रति मन में रहता था। उस अनदेखे, अनजाने ईश्वर के प्रति मेरे मन में बचपन से ही एक रिश्ता पनपने लगा था। जब-जब कोई ईश्वर के बारे में कुछ कहता था तो मेरा बावला मन उसे सहज ही स्वीकार कर लेता था।

मन शांत रहने लगा

माँ-बाप की इकलौती बेटी हूँ। बड़े लाड़-प्यार से परवरिश हुई है। माँ-बाप जब भी मेरी शादी की बात करते, मन अनजाने खौफ़ से भर जाता। सन् 2009 में पहली बार अपनी मौसी के साथ ब्रह्माकुमारी आश्रम में आने का सुअवसर मिला। बहनों ने मुझे कोर्स कराया। जैसे-जैसे ईश्वरीय ज्ञान सुनती गई वैसे-वैसे मन के अंदर छिपे काफी सवाल हल होने लगे। ज्ञान काफी अच्छा लगने लगा। पहले बहुत चिड़चिड़ी रहती थी, बात-बात पर क्रोध आता था परन्तु ज्ञान सुनने और योग का अभ्यास करने से मेरा मन शांत रहने लगा। एक बार आश्रम में बहनजी ने कर्मणा सेवा करने का आग्रह किया और मैं तैयार हो गई। तब पूरा दिन मैं आश्रम में रही, सेवा की और भोजन आदि सब आश्रम में ही किया। मुझे इतना आनन्द मिला कि मैं सुध-बुध खो बैठी। न ही अपने घर जाने का ख्याल आया और न ही घर की याद आई। ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं अपने असली घर में ही हूँ। फिर तो दिन-प्रतिदिन आश्रम के प्रति मेरा खिंचाव अधिक बढ़ने लगा। जब भी सेवा का

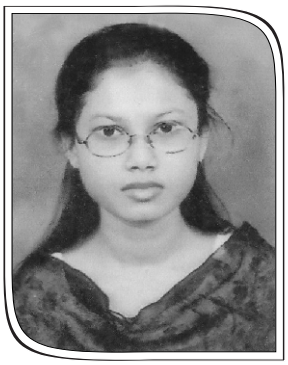

मौका मिलता, मैं आश्रम में रहने चली आती। यहाँ की शान्ति को छोड़कर वापस जाने का बिल्कुल ही मन नहीं करता था।

चिन्ता मत कर, मैं बैठा हूँ

माता-पिता को जैसे ही मेरे आश्रम में जाने की बात मालूम पड़ी तो उन्होंने पाबन्दी लगा दी और क्रोध में आकर मेरी शादी करने का फैसला कर लिया। मैं बहुत दु:खी हो गई और बाबा के कमरे में बैठ कर रोने लगी। बाबा से कहा, बाबा, अब आप ही मेरी मदद कर सकते हैं, कृपया बाबा आप ही कुछ कीजिये। अचानक मुझे महसूस हुआ कि बाबा कह रहे हैं, ''बच्चे, तू चिन्ता मत कर, मैं बैठा हूँ।'' उन्हीं दिनों बी.ए. फाइनल ईयर की परीक्षा के बाद मैं आश्रम में आ गई और पूरा दिन बाबा के कमरे में बैठी बाबा से बातें करती रही कि बाबा आप मुझे नसीब से मिल गये हो, अब मैं आपको किसी भी कीमत पर खोना

नहीं चाहती हूँ। चाहे जो हो जाये मगर मैं आपका हाथ और साथ कभी नहीं छोड़ूँगी। कितने ही विघ्न आयें उनका मुकाबला करूँगी।

सोच-विचार कर लिया था फैसला

मैंने आश्रम पर रहकर जन-जन की सेवा करने कर फैसला ले लिया था। यह फैसला अच्छी तरह सोच-विचार के बाद और अपनी दिव्य अनुभूतियों के आधार पर लिया था। मेरे सामने भौतिक संसार की चकाचौंध का मार्ग खुला था, मैं उसमें बिना किसी रोक-टोक के जा सकती थी परन्तु अंतरात्मा की बार-बार यही पुकार थी कि तुम्हें भगवान का बनना है, संसार को शान्ति का मार्ग दिखाना है, भोगों में डूबकर जीवन को नष्ट नहीं करना है, योग द्वारा जीवन को महान बनाना है। अन्तरात्मा की आवाज़ को दबाकर जीना तो मुर्दे का जीवन है अत: सब विरोधों का सामना करके भी मुझे आत्मतृप्ति के लिए और विश्व-सेवा के लिए इस फैसले पर अडिग रहना था।

पुलिस और वकील का सामना

दो दिन के बाद मेरे पिताजी पुलिस और वकील को साथ लेकर सेन्टर पर आ गये। उन्होंने सेन्टर की बहन जी को डराया और धमकाया। पिताजी ने बहन जी पर मुकदमा करने का फैसला कर लिया। यह जान कर मुझे बहुत अफ़सोस हुआ। मैंने बाबा से कहा, बाबा, आपने मेरी मदद करने का वादा किया था पर यह क्या, आपने तो बहन जी को मुसीबत में डाल दिया, मेरे कारण उन्हें तकलीफ़ उठानी पड़ेगी। बाबा मुस्करा रहे थे और उसी अंदाज़ में मुझे कह रहे थे, ''बच्चे, तू चिन्ता मत कर, मैं बैठा हूँ।'' बहनजी ने पुलिस वाले भाई को और वकील भाई को समझाया कि देखो यह ईश्वरीय परिवार है। यहाँ हम सब एक परिवार की तरह रहते हैं। हम सब ने स्वेच्छा से अपना जीवन ईश्वरीय सेवा एवं मानव सेवा अर्थ समर्पण किया है। हम पवित्र रह कर इस विश्व को परिवर्तन करने में उस परमपिता परमात्मा की मदद करना चाहते हैं तो इसमें बुराई क्या है और यदि सुष्मिता बहन स्वेच्छा से ईश्वरीय कार्य में अपना जीवन समर्पण करना चाहती है तो आप क्यों उसे इज़ाजत नहीं दे रहे हैं। वो बालिग है और उसे अपना जीवन, अपने तरीके से जीने का हक है, फिर आप सबको क्या असुविधा है।

बहुत अच्छी संस्था है

बहनजी ने बड़े प्यार से समझाया तो चमत्कार-सा हो गया। मुझे महसूस हुआ मानो बाबा ने यह चमत्कार कर दिखाया है। वकील ने पुलिस वालों से कहा, लड़की 18 साल से बड़ी है अत: कानूनन हम उसके साथ ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं कर सकते। अगर वह अपनी इच्छा से यहाँ रहना चाहती है तो हम उसे रोक नहीं सकते, वैसे मैं इस संस्था को जानता हूँ, यह बहुत अच्छी संस्था है। माता-पिता मेरी लगन को देख कर चले गये और इस तरह मुझे बाबा के घर में रहने का सौभाग्य मिला। मैं यहाँ बहुत प्रसन्न हूँ और यहाँ रहकर मेरी खूब आध्यात्मिक उन्नति हो रही है। अब तो दिल बार-बार बाबा का शुक्रिया अदा करता है। मेरी खुशी का तो मानो ठिकाना ही नहीं है।

❖

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी

नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है।

सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है। अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें:

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान।

मो.: 09413240131 **फोन:** (02974) 238347/48/49

वेबसाइट: www.ghrc-abu.com **फैक्स:** (02974) 238570

ई-मेल:drmurlidharsharma@gmail.com

जेल में मिली नई राह

● राजीव कुमार त्रिपाठी, जिला कारागार, देवरिया

मेरा लौकिक घर गोरखपुर में है। घर में लौकिक माता, एक बहन तथा एक भाई है। बचपन से ही मेरा भक्ति से लगाव था। श्रीकृष्ण, श्रीविष्णु, श्रीदुर्गा की पूजा करता था। अपने सभी बड़ों से पूछता था कि हमारे इतने भगवान हैं, उनमें सबसे बड़ा कौन है? ब्रह्मा, विष्णु, शंकर में बड़ा कौन है? जब मैं तीन-चार साल का था तो मेरे पिताजी का देहांत हो गया। अपने सभी मित्रों के पिताओं को देखता तो अकेले में और पूजा करते समय यही कहता कि भगवान, सभी के पिता हैं, मेरे नहीं हैं, आप खुद मेरे पिता बनकर आ जाओ, मुझे प्यार करो और मैं रोता रहता।

बचपन से क्रोधी बहुत था। बड़ा हुआ तो देह-अभिमान और बढ़ा, इस कारण काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार बढ़े। मैं गलत संगत में फँस गया। गुटखा, पान खाने लगा; बीयर, सिगरेट भी पीने लगा। फिर मेरे ऊपर डबल हत्या के साथ-साथ अन्य बहुत-से मुकद्दमे दर्ज हो गये। मैं जेल चला गया। गाली देना, बात-बात में किसी को मार देना मेरा स्वभाव बन गया। पूजा-पाठ करता था लेकिन पूजा से उठते ही विकर्म (क्रोध) करना शुरू हो जाता था। लोगों ने मेरा नाम ही दुर्वासा रख दिया। क्रोध में मैं देवी-देवताओं को भी गाली देता था।

सन् 2007 में मैं गोरखपुर जेल में आया। सन् 2010 में ब्रह्माकुमारी बहनें व ब्रह्माकुमार भाई जेल में आये। राजयोग सिखलाया। मेरे साथ रहने वाले बहुत से कैदी भाई राजयोग सीखने जाने लगे। वे कहते कि भगवान इस धरती पर आ गये हैं। हम देवी-देवता बनेंगे। वे हमसे भी राजयोग सीखने को कहते पर मैं पूजा-पाठ ही करता रहा।

गोरखपुर जेल में झगड़ा होने के कारण मेरा तबादला देवरिया जेल में हो गया। मुझे दंड भी मिला। जिससे झगड़ा हुआ, उसके प्रति मेरे मन में बदले की भावना थी। मैं दिन-रात उसी बारे में सोचता रहता। संयोग से बैरक नं.3 में एक ब्रह्माकुमार भाई ने मुझे ज्ञानामृत व कोर्स की किताबें पढ़ने को दीं, मुझे अच्छा लगा। फिर मैंने कोर्स किया और योग करने लगा। स्वदर्शन चक्र फिराने लगा। कुछ समय बाद जेल में नियमित क्लास शुरू हो गई।

चरित्र में परिवर्तन

ज्ञान मिलने के बाद सर्वशक्तिवान की शक्तियाँ मिलती गईं और खान-पान में पवित्रता आती गई। लहसुन, प्याज, गुटखा, बीयर आदि सहज छूट गये। क्रोध भी खत्म होने लगा। शुरू

में विरोध हुआ, लोगों ने पागल कहना शुरू किया, फिर सभी सहयोगी बन गये। सभी मुझे प्यार करने लगे। मेरी बदला लेने की भावना भी बदल गई। अधीक्षक साहब (शर्मा जी) व उप-जेलर (राय साहब) व सभी बंदी भाइयों व बंदी रक्षकों का पूरा सहयोग मिला। पहले सभी से ईर्ष्या करता था, अपने को दुर्भाग्यशाली समझता था। जेल का समय जीवन की बर्बादी लगता था पर अब अपने को भाग्यशाली इसलिए समझता हूँ कि जेल में आकर नई श्रेष्ठ राह मिली।

अड़तीस वर्ष की उम्र तक शादी न होने के कारण हीनभावना से ग्रसित था। पर अब राज़ को समझा कि बाबा ने कल्याण ही किया, पवित्र रखा। अब तो प्रतिज्ञा की है कि पवित्र रहना है। हम 30 भाई ईश्वरीय महावाक्य सुनते हैं। बाबा मुझे निमित्त बना सुनाता है। अब तो बस यही खुशी है कि भगवान ने स्वयं मुझे खोज लिया। हम ईश्वरीय पालना में पल रहे हैं।

बचपन के संकल्प पूरे हुए

मैं बाबा (भगवान) से कहता था कि आप मेरे पिता बन जाओ तो सही में बाबा ने मुझे अपना बच्चा बना लिया। अब तो बस यही इच्छा है कि जैसे मेरा भाग्य बदला, कल्याण हुआ, वैसे ही सभी आत्माओं का कल्याण हो। सभी भाई-बहनों से अनुरोध है कि अभी भगवान आये हुए हैं, वर्तमान संगमयुग में सभी अपना भाग्य बनायें। राजयोग सीखकर मनुष्य से देवता बनें। परमात्मा ज्ञान के सागर, सुख के सागर, प्रेम के सागर, आनन्द के सागर, पवित्रता के सागर, शान्ति के सागर, सर्वशक्तिवान हैं। सभी संबंधों का सुख देने वाले हैं। ❖

मेरे सुहाने बाबा

ब्रह्माकुमार सत्यप्रकाश, छिबरामऊ (कन्नौज)

मेरे सुहाने बाबा, मनमीत मेरे प्यारे।
तेरी याद में ही गुज़रें जीवन के पल ये सारे।
तेरी याद का ही दम है, श्रीमत पर हर कदम है।
निश्चय हुआ है जब से, सेवा ही बस धर्म है।
हासिल अपार खुशियाँ, हुए आप जो हमारे।
मेरे सुहाने बाबा, मनमीत मेरे प्यारे।।

ये ज्ञान आपका है योगी मुझे बनाया।
माया को दूर करके दे दिया अपना साया।
पाया नहीं हितैषी, जग में सिवा तुम्हारे।
मेरे सुहाने बाबा, मनमीत मेरे प्यारे।।

अब फर्ज मेरा है ये बन आपका दिखाऊँ।
हासिल करूँ गुणों को सब शक्तियाँ मैं पाऊँ
मझधार जो है नइया लग जायेगी किनारे।
मेरे सुहाने बाबा, मनमीत मेरे प्यारे।।

पूँजी पवित्रता की, सबसे बड़ी कमाई।
रखना इसे सुरक्षित, बाबा से जो है पाई।
जिसने इसे गंवाया सब कुछ वो अपना हारे।
मेरे सुहाने बाबा, मनमीत मेरे प्यारे।।

राजयोग से मन की शान्ति

ब्रह्माकुमारी आशा, चित्तौड़गढ़ (राज.)

आज मनुष्य स्वयं के सत्य परिचय को भूल गया है। वह स्वयं को देह मान बैठा है इसलिए उसे शान्ति व चैन नहीं है। वह देह और देह के आकर्षण में फँसा हुआ है। सच्ची मन की शान्ति के लिए जंगलों में, तीर्थों पर भटक रहा है फिर भी अशान्त ही रहता है।

जब गर्मी के कारण बेचैनी होती है तो हम कूलर, पंखे या फिर ए.सी.(एयर कंडीशनर) के उपयोग से शीतलता का अनुभव करते हैं। वास्तव में यह शीतलता तो शरीर को राहत देती है, न कि मन को। क्रोध अग्नि में जलते हुए मनुष्य को कोई ए.सी.या कूलर शीतलता प्रदान नहीं कर सकते। मन की शान्ति हमें राजयोग से मिलती है। आत्मा और शरीर दोनों अलग-अलग हैं। इसे समझ लेने से मन की सच्ची शान्ति अनुभव कर सकते हैं। हम आत्मा हैं, इसकी सूक्ष्म शक्तियाँ मन-बुद्धि-संस्कार हैं। आत्मा चैतन्य शक्ति है, यह सात मूल गुणों का पुँज है, ये सात गुण हैं – ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनन्द और शक्ति। आत्मा परमपिता परमात्मा शिव की संतान है। शरीर आत्मा का वस्त्र है जिसे धारण कर आत्मा पार्ट बजाती है। आत्मा अविनाशी और शरीर विनाशी है। शान्ति तो गले का हार है। शान्ति तो आत्मा का स्वधर्म है। यह राज़ स्वयं शिव पिता, प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से समझा रहे हैं।

राजयोग की यथार्थ विधि मन की सच्ची शान्ति का अनुभव कराने वाली है। इस विधि द्वारा स्वयं को आत्मा समझ, उस निराकार, ज्ञान-गुणों के सागर शिव परमात्मा से बुद्धि को जोड़कर हम असीम शांति का अनुभव कर सकते हैं व अनेकों को इसका अनुभव कराने के माध्यम बन सकते हैं। ❖

जब सोये खुले आसमान के नीचे

● ब्रह्माकुमारी अमिता मराठे, इन्दौर

सन् 2007, मार्च का महीना था। हम शान्तिवन (आबू रोड) पहुँचे। पता चला, आने वाले बच्चों को टेन्ट में सोना होगा। पहला अवसर था, इस तरह रहने का। मन में हलचल शुरू हो गई। व्यर्थ ने वार करना शुरू कर दिया। सोचा, एक पहचान की बहन का पास में ही फ्लैट है, वहाँ तीन-चार दिन निकाल लेंगे। फिर सोचा, होटल में ठहरेंगे। तरह-तरह के विचारों के रूप में माया वार करने लगी, कैसे सोयेंगे? सामान कहाँ रखेंगे? कितनी परेशानी होगी? रात में मच्छर काटेंगे आदि-आदि।

कैसे कटेंगे चार दिन?

मैं आत्मा माया के वश में थी, सब कुछ भूल चुकी थी। बस एक ही सवाल था, कैसे कटेंगे चार दिन? मैंने कहा, हाँ माया, आप ठीक कह रही हो किन्तु वह बहन हम तीन बहनों को कैसे रखेगी? वहाँ जल की भी समस्या है, फिर आने-जाने में भी परेशानी होगी। व्यर्थ चिन्तन मेरा मजा ले रहा था। माया भी खुश थी। मेरे व्यर्थ संकल्पों का स्वागत बड़ी गर्मजोशी से कर रही थी। 'हम भगवान से मिलने आये हैं', यह भूलकर हम माया से मिल रहे थे।

कहानी एक संन्यासी की

मैंने देखा, मातायें, भाई कम्बल, तकिये, चद्दरें लाकर टेन्ट में रख रहे थे पर हम सोच में अपने सामान के पास ही खड़े थे। तभी मुझे एक संन्यासी की कुटिया वाली बात याद आई। दो संन्यासी हिमालय की तराई में रहते थे। एक वृद्ध और दूसरा नौजवान था। एक बार लंबी तीर्थ-यात्रा करके जब अपने ठिकाने पहुँचे तो देखा, आंधी-पानी ने उनकी कुटिया को तबाह कर दिया है। युवा संन्यासी बड़बड़ाने लगा कि जो लोग छल-फरेब करते हैं उनके मकान सुरक्षित रहते हैं। हम जो दिन-रात प्रभु-स्मरण करते हैं, उनकी कुटिया तहस-नहस हो जाती है। इस पर वृद्ध संन्यासी बोला, दु:खी मत हो, झोपड़ी तहस-नहस हो गई पर आधी छत अभी भी सही सलामत है, हमें तो ईश्वर का आभार मानना चाहिए कि हमारे लिए इतनी छत बचाकर रखी है।

युवा संन्यासी वृद्ध की बात समझ नहीं पाया, रात भर जागता रहा जबकि वृद्ध सोकर उठा तो बोला, धन्यवाद भगवान, आज खुले आसमान के नीचे बेहद अच्छी नींद आई। काश! यह छप्पर पहले उड़ जाता। इस पर युवा संन्यासी गुस्से से बोला, एक तो कुटिया ही नहीं रही, ऊपर से आप ईश्वर को धन्यवाद दे रहे हो। वृद्ध बोला, तुम हताश हो गए हो इसलिए रात भर जागते रहे हो और दु:खी रहे हो पर मैं खुश हूँ इसलिए सुख की नींद सो गया।

तुरन्त हुई सावधान

यह कहानी याद आते ही मेरा भी स्वमान जाग गया कि 'मैं सामंजस्य रखने वाली आत्मा हूँ'। योगावस्था में मैंने महसूस किया, बाबा सम्मुख हैं और कह रहे हैं, बच्ची, बेहद का संन्यास (वैराग्य), इच्छा मात्रम् अविद्या, व्यर्थ का त्याग, ये सब श्रीमत भूल गई क्या? देखो, यह शिवबाबा का घर है, बच्चों की चिन्ता बाबा को है। मैं तुरन्त सावधान हो गई। बहनों से कहा, कुछ मत सोचो, जो व्यवस्था बाबा देंगे स्वीकार है। तीन दिन खुले आसमान के नीचे टिमटिमाते तारों के स्वच्छ प्रकाश में अनोखी न्यारी बेहद की स्थिति का अनुभव करते बीत गये। सारा समय एकानॉमी (मितव्ययता) व एकनामी (एक बाबा की याद) के चमत्कार का अनुभव करते पुन: घर लौटे।

कहते हैं, निराशा व्यक्ति को दु:ख देती है। हर हाल में खुश रहने वाला व्यक्ति विपरीत स्थिति को भी अनुकूल बना लेता है। जिसके पास खुशी का भंडार है उसे दु:ख, निराशा तथा कमी का एहसास कभी नहीं होता बल्कि हर स्थिति का पूरा आनन्द लेने में वह सदा समर्थ रहता है। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1.अहमदनगर- समाजसेवी भ्राता अन्ना हजारे को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु.राजेश्वरी बहन एवं ब्र.कु.दीपक भाई। **2.मऊ-** सांसद भ्राता दारा सिंह चौहान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.विमला बहन। **3.वघराजी-** विधायिका बहन नन्दनी मरावी का मुख मीठा कराते हुए ब्र.कु.प्रमिला बहन। **4.फर्रुखाबाद-** भ्राता शिवपाल सिंह यादव, पी.डब्ल्यू डी. तथा सहकारिता मन्त्री को ईश्वरीय निमन्त्रण देते हुए ब्र.कु.मंजू बहन। **5.सेडम-** डा.महेश हेमाद्री की पुस्तक 'वृद्धावस्था में आरोग्य निर्वहन' के विमोचन कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कर्नाटक के चिकित्सा शिक्षा मन्त्री भ्राता श्री शरण प्रकाश पाटील, श्री सदाशिव स्वामीजी, ब्र.कु.कला बहन तथा अन्य। **6.दौसा-** फिल्म निदेशक भ्राता महेन्द्र वर्मा की माताजी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शीतल बहन। साथ में अभिनेता भ्राता गोविन्दा व सांसद डा.किरोड़ीलाल मीणा। **7.कटक-** 'व्यापार तथा उद्योग में सफलता के लिए आध्यात्मिक शक्ति' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात पत्रकार भ्राता अरुण कुमार पंडा, ब्र.कु.कमलेश बहन, ब्र.कु.गीता बहन तथा अन्य। **8.तानसेन (नेपाल)-** मन्त्री परिषद के अध्यक्ष भ्राता खिलराज रेग्मी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शारदा बहन। **9.शान्तिवन-** विधायक भ्राता जगसीराम कोली व श्रीमती लक्ष्मी कोली को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.भूपाल भाई, ब्र.कु.उर्मिला बहन तथा अन्य।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2012-2014 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2013-2014. Published on 25th of each Month & Posted on 1st to 6th of each month. Price 1 copy Rs. 7.50, Issue : January 2014.

भुवनेश्वर :
उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम भ्राता एस.सी.जमीर को ईश्वरीय निमन्त्रण देते हुए ब्र.कु.लीना बहन तथा ब्र.कु.पूनम बहन।

पानीपत :
विश्वशान्ति सभागार की शिलान्यास पट्टिका का अनावरण करते हुए हरियाणा के मुख्यमन्त्री भ्राता भूपेन्द्र सिंह हुड्डा। साथ में ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.भारत भूषण तथा अन्य।

छोटा उदेपुर:
गुजरात के मुख्यमन्त्री भ्राता नरेन्द्र भाई मोदी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.राज बहन।

इंदौर: 'शक्ति निकेतन' कन्या छात्रावास के वार्षिक महोत्सव का उद्घाटन करते हुए डा.उमाशशि शर्मा, ब्र.कु.ओमप्रकाश भाई, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, संभागायुक्त संजय दुबे एवं ब्र.कु.बहनें।